RNI No.MPHIN/2002/07269

वर्ष-17, अंक-2 जुलाई-सितम्बर 2018 मूल्य-20/- रुपए

रघुकलश

सामाजिक पत्रिका

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री
शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री
दावे नहीं प्रमाण
महिला सशक्तिकरण के लिए उठाए क्रांतिकारी कदम
मध्यप्रदेश में बढ़ी उनकी हिस्सेदारी और आरक्षण
मध्यप्रदेश सरकार ने वर्ष 2003 से लेकर 2018 तक महिलाओं के हितों के लिए अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं जिनके कारण हर क्षेत्र में वे बढ़-चढ़ कर भाग ले रही हैं और सम्मान की जिंदगी जी रही हैं।
शासकीय सेवाओं में महिलाओं को आरक्षण
कोई आरक्षण नहीं
33%
2003
2017
पंचायतों में आरक्षण
51.52% की वृद्धि
33%
50%
2 लाख से अधिक महिला प्रतिनिधि
2003
2017
महिला स्व-सहायता समूह
1900% की वृद्धि
10 हजार
2.00 लाख
2003
2017
D-17005/18
पूरा किया विकास का वादा, आगे है अटल इरादा
मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी
/CMMadhyaPradesh
/CMMadhyaPradesh
आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2018

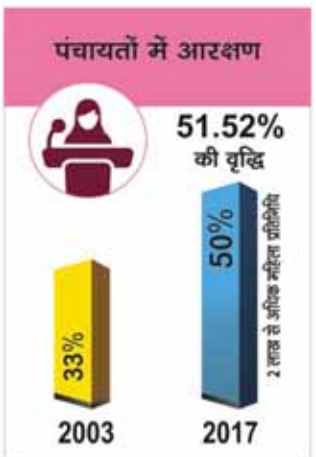

रघुकलश

त्रैमासिक सामाजिक पत्रिका

RNI No. MPHIN/2002/07269

वर्ष : 17, अंक : 2 जुलाई-सितम्बर 2018 मूल्य : रु.20/-

संपादक की कलम से

आध्यात्मिकता के लिए जरूरी है शुद्धता

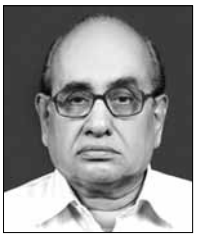

अध्यात्म और आध्यात्मिकता हमें उस ऊंचाई तक ले सकते हैं जिस तक पहुंचना आम आदमी का लक्ष्य होता है, जो अपने आपको कुछ अलग सिद्ध करना चाहते हैं उनके लिए अध्यात्म एक ऐसा साधन है जिसे अपनाकर वे निरंतर अपने आभामंडल को परवान चढ़ा सकते हैं। सवाल यह उठता है कि इस पथ पर आगे बढ़ने के लिए आखिर हमें क्या करना चाहिए। इसका सही जवाब श्रीमॉ और श्रीअरविन्द के विचारों के प्रकाश में यदि हम खोजेंगे तो हमारी राह न केवल आसान होगी बल्कि यदि हम पूरी निष्ठा, समर्पण व एकाग्रता से उस पर अमल करेंगे तो उस लक्ष्य को हम पा सकते हैं जिसकी अभीप्सा वे सभी रखते हैं जो मानव जीवन को किसी सार्थक मुकाम तक पहुंचाना चाहते हैं।

मन को निश्च्छल करने तथा आध्यात्मिक अनुभूति पाने के लिए सबसे पहली अनिवार्य शर्त है प्रकृति को शुद्ध करना है। कभी-कभी ऐसा करने में अनेक वर्ष लग जाते हैं। सवाल यह उठता है कि प्रकृति को शुद्ध तथा तैयार करने के सरलतम साधन क्या हैं। इस संबंध में महर्षि श्रीअरविंद का कहना है कि इसके लिए उचित मनोवृत्ति के साथ ही साथ कार्य करना सबसे आसान तरीका है। यानी निष्काम भाव से या निरहंकार भाव से कार्य किया जाये, कामना, मांग या अहंकार की सभी गतिविधियों को त्याग दिया जाये, सभी कार्य भगवती माता को अर्पण के रुप में किये जायें तथा उनके नाम स्मरण और उनसे इस प्रार्थना के साथ किये जायें कि वे अपनी शक्ति को अभिव्यक्त करें और कार्य को ग्रहण करें, जिससे वहां भी आंतरिक नीरवता में, तुम उनकी उपस्थिति तथा क्रियाशीलता को अनुभव कर सको। दो संभावनाएं होती हैं एक है व्यक्तिगत प्रयास के द्वारा शुद्धीकरण, जो लम्बा समय लेता है, दूसरा है भागवत कृपा के प्रत्यक्ष हस्तक्षेप के द्वारा जो प्राय: तेजी से क्रिया करता है। भागवत कृपा के हस्तक्षेप द्वारा शुद्धीकरण के लिये व्यक्ति का सम्पूर्ण समर्पण और आत्मदान होना अनिवार्य है और उसके लिए, पुन: सामान्य रुप से मन का पूर्णत: अचंचल होना आवश्यक है जिससे भागवत शक्ति को क्रिया करने में हर पग पर व्यक्ति की निष्ठा द्वारा समर्थन प्राप्त हो। अन्यथा वह शान्त और स्थिर बना रहे।

श्रीअरविन्द ने कहा है कि यह बिलकुल सच है कि साधना को चलाते रहने के लिए कुछ मात्रा में शुद्धीकरण अपरिहार्य है, अधिक पूर्ण शुद्धिकरण कहीं अधिक अच्छा होता है, क्योंकि जब सिद्धियां आने लगती हैं तब वे बड़ी कठिनाइयों अथवा पुनर्पतन और पतन या विफलता की संभावना के बिना आती रह सकती हैं।

--शेष पेज 06 पर

राहुल

सीट कव्हर हाऊस

निर्माता: कार सीट कव्हर एवं कार डेकोरेशन

श्रीराम रघुवंशी

:: मोबाइल ::
9425302557

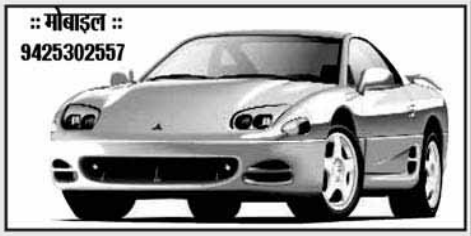

प्लॉट नं. 196, शॉप नं. 30, कामधेनु कॉम्पलेक्स के पीछे, जोन-1, एम. पी. नगर, भोपाल, फोन: 0755-4285551

राष्ट्रीय अध्यक्ष की कलम से

एकजुट होकर अपनी शक्ति का अहसास कराएं

गणेश चतुर्थी, नवदुर्गा एवं दशहरा पर्व की सभी सामाजिक बंधुओं को अग्रिम हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। जब तक रघुकलश का यह अंक आपके हाथों में पहुंचेगा तब तक विधानसभा के 2018 के चुनाव की रणभेरी बजने लगेगी। यह चुनाव रघुवंशी समाज के लिए भी एक अवसर की तरह है जिसमें हम आपस में एकजुट होकर अपनी शक्ति और अस्तित्व का अहसास राजनीतिक दलों को करा सकते हैं। हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि जिस-जिस विधानसभा क्षेत्र से रघुवंशी समाज का सदस्य चुनाव लड़ता है, चाहे वह किसी भी राजनीतिक दल के टिकिट पर लड़ रहा हो, सभी एकजुट होकर तन-मन-धन से उसका सहयोग करें। राजनीतिक दबदबे के लिए यह जरुरी है कि राज्य विधानसभा में हमारे समाज के अधिक से अधिक प्रतिनिधि पहुंचें। मध्यप्रदेश के 23 से अधिक जिलों में रघुवंशी समाज काफी मजबूत स्थिति में है और यदि हम एकजुट हो जाते हैं तथा अन्य समाज के लोगों को अपने साथ जोड़ लेते हैं तो हमारे समाज का हर उम्मीदवार चुनाव जीत सकता है। समाज का प्रयास यही है कि कांग्रेस, भारतीय जनता पार्टी, और आम आदमी पार्टी समाज के कम से कम नौ-नौ उम्मीदवार चुनावी समर में उतारें। हमें यह भी प्रयास करना चाहिए कि किसी भी रघुवंशी उम्मीदवार के खिलाफ कोई अन्य रघुवंशी उम्मीदवार चुनाव न लड़े बल्कि सब उसका समर्थन करें जो चुनाव लड़ रहा हो, चाहे उसका निशान कुछ भी हो।

मानव जीवन में सुख और दुख लगातार क्रमशः आने वाली अवस्था है और हर आदमी के जीवन में ऐसे क्षण कभी न कभी अवश्य आते हैं। यह सब धूप-छांव की तरह है। जीवन पथ पर अग्रसर होते हुए रास्ता सुगम हो या दुर्गम इसका निर्धारण कोई अन्य नहीं बल्कि हमारे अपने स्वयं के कर्म ही करते हैं। तुलसीदास रचित रामचरित मानस में विस्तार से यह बताया गया है कि जीवन में दुखों का कारण क्या है और यदि हम उसमें बताये गये रास्तों का अनुसरण करेंगे तो हमारा मार्ग दिन-प्रतिदिन सुगम व आसान होता जायेगा। छोटे-मोटे दुख व कष्ट जो भी जीवन में आते हैं उन पर हम आसानी से विजयश्री प्राप्त कर लेंगे। यदि हम अपने कर्मो की बारीकी से मीमांसा करेंगे तो हमें इस बात का अहसास हो जायेगा कि सुख व दुख के क्या कारण हैं। जो आदमी सुपथ पर चलता है और अच्छे कर्म करता है उसको जीवन में दुखों की अनुभूति नहीं होती या दुख आते हैं तो वह उसका हंसते-हंसते सामना कर लेगा। रामचरित मानस में कहा गया है कि ''काहू न कोउ सुख-दुख कर दाता। निज कृत कर्म भोग सम भ्राता।।

रामचरित मानस के वचन सत्कर्म के प्रति व्यक्ति को लगातार प्रेरित करते हैं, और इनसे ही जीवन में उपलब्धियां प्राप्त होती हैं। संत समागम और संतों के विचार सुनकर यदि हम उनका अनुसरण करते हैं तो हमारी अभिरुचि अच्छे कार्यो में बढ़ती है। संत ही मानव को बताते हैं कि उसके जीवन का असली उद्देश्य क्या है। हम अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य को किस मार्ग पर चलकर प्राप्त कर सकते हैं यह ज्ञान भी हमें संतों से ही मिलता है। तुलसीदास की इस चौपाई को हमें हमेशा याद रखना चाहिए ''संत समागम हरि कथा, तुलसी दुर्लभ दोय। सुत दारा और संपदा पापी के भी होय''।।

हमें हमेशा यह याद रखना चाहिए कि आज समाज में चारों ओर अशांति और कलह का जो साम्राज्य दिखाई पड़ता है, वह इसलिए कि हम कुकृत्य करते हैं और यही हमें किसी न किसी रुप में अच्छे कार्यो से विरत करते हैं। जब हम हमेशा निज हित और स्वार्थ में लगे रहते हैं और दूसरों को कष्ट पहुंचाने, नीचे गिराने आदि के षडयंत्रों में संलग्न हो जाते हैं तो उसका दुष्परिणाम हमें अपने जीवन में दिखाई पड़ने लगता है, इसलिए यह जरुरी है कि हम मानव मात्र के कल्याण के बारे में सोचें ओर उसके लिए कार्य करें। सत्कर्मो से ही हमारा जीवन सफल हो सकता है और जीवन यात्रा सुगम बन सकती है।

हजारीलाल रघुवंशी
राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतीय रघुवंशी (क्षत्रिय) महासभा

जीवन-संग्राम में विजय के सूत्र

रमेश रंजन त्रिपाठी

विद्वानों ने जीवन को संग्राम की उपमा दी है। इस संग्राम में विजयी होने के लिए रणकौशल के साथ रथ और कुशल सारथी चाहिए। असफलता के भय से मुक्ति पाना होगी। धर्म, अधर्म के निर्णय के लिए नीर-क्षीर विवेक वाली बुद्धि की आवश्यकता होगी। पूरा खेल मानसिक दृढ़ता का है। स्थितप्रज्ञ बनने के लिए प्रयत्न करने पड़ेंगे और इन सबके मार्गदर्शन के लिए गोस्वामी तुलसीदास जी ने कृपापूर्वक हमें श्रीरामचरितमानस जैसा अद्भुत ग्रंथ प्रदान किया है।

इस मृत्युलोक में जीवनपथ पर चलते हुए पुरुषार्थ से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त करना सभी का परम लक्ष्य होता है। गोस्वामी जी ने श्रीरामचरितमानस में रामकथा को माध्यम बनाकर सभी को जीवन जीने की कला सिखाई है। घोर अहंकारी रावण की लंका में लोभ, मोह, मद, काम, क्रोध रूपी राक्षसों का निवास है। इनके बीच में विभीषण उसी प्रकार निरुद्ध और प्रताड़ित हो रहे हैं जैसे माया से घिरी हुई जीवात्मा। फिर उन्हें रामकृपा से हनुमान जी जैसे संत के सत्संग का दुर्लभ अवसर प्राप्त होता है। तुलसी बाबा कहते हैं-

बिनु सतसंग बिबेक न होई, रामकृपा बिनु सुलभ न सोई।

रामकृपा पहली सीढ़ी है। श्रीराम अहैतुक कृपा करते हैं। श्रीराम की कृपा होने पर सत्संग के दुर्लभ अवसर प्राप्त होते हैं।

जैसे बजरंगबली के सत्संग और उपदेश ने विभीषण को श्रीराम की शरण में जाने का मार्ग प्रशस्त किया उसी प्रकार संतों का संग मानवमात्र को प्रभु की शरण में पहुँचाने का सुलभ उपाय है।

भगवान की शरण में जाना क्यों आवश्यक है ? वस्तुतः शरणागति मानसिक अवस्था है। अपनी दिनचर्या में बदलाव करने की बड़ी आवश्यकता नहीं होती, केवल मनःस्थिति में परिवर्तन किया जाता है। सुख-दुख भी मन की बातें हैं। यदि मन को भौतिक अवस्था के साथ आध्यात्मिक स्वरूप में भी स्वस्थ रखा जाए तो सुखी होने का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। मन को स्वस्थ रखने के लिए मानसिक रोगों को समझना होगा। गोस्वामी जी ने 'मानस' में कुछ मानसिक रोगों का वर्णन किया है-

परम धर्म श्रुति बिदित अहिंसा, पर निंदा सम अघ न गरीसा।
मोह सकल ब्याधिन्ह कर मूला, तिन्ह ते पुनि उपजहिं बहु सूला।
काम बात कफ लोभ अपारा, क्रोध पित्त नित छाती जारा।
प्रीत करहिं जौं तीनिउ भाई, उपजइ सन्यपात दुखदाई।
विषय मनोरथ दुर्गम नाना, ते सब सूल नाम को जाना।
ममता दादु कंडु इरषाई, हरष बिषाद गरह बहुताई।

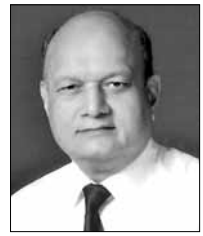

पर सुख देखि जरनि सोइ छई, कुष्ट दुष्टता मन कुटिलई।

अहंकार अति दुखद डमरुआ, दंभ कपट मद मान नेहरुआ।

तृस्ना उदरबृद्धि अति भारी, त्रिबिध ईषना तरुन तिजारी।

जुग बिधि ज्वर मत्सर अबिबेका, कहँ लगि कहौं कुरोग अनेका।

तुलसी बाबा ने अहिंसा को परम धर्म और पर निंदा को सबसे बड़ा पाप कहा है। वे मोह यानी अज्ञान को सभी मानसिक रोगों की जड़ मानते हैं। इन व्याधियों से अनेक शूल उत्पन्न होते हैं। गोस्वामी जी ने काम को वात, लोभ को अपार कफ और क्रोध को सदा छाती जलाने वाले पित्त की संज्ञा दी है। इन तीनों के मिलने से

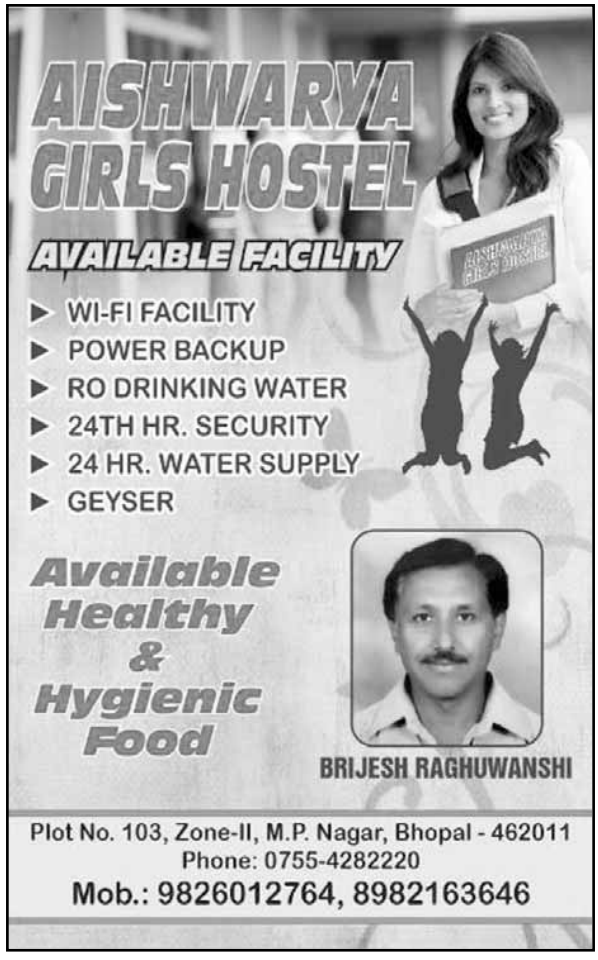

दुखदायक सन्निपात रोग पैदा होता है। गोस्वामी जी ने ममता को दाद, ईर्ष्या को खुजली, हर्ष-विषाद को गले के रोग, पराये सुख को देखकर होने वाली जलन को क्षयी और दुष्टता तथा मन की कुटिलता को कोढ़ कहा है। अहंकार अत्यंत दुख देने वाला गाँठ का रोग है। दम्भ, कपट, मद और मान नहरुआ अर्थात् नसों की बीमारियाँ हैं। तृष्णा बड़ा भारी उदरवृद्धि यानी जलोदर रोग है। पुत्र, धन और मान की इच्छाएँ प्रबल तिजारी हैं। मत्सर और अविवेक ज्वर हैं। ऐसे अनेक रोग हैं।

इन असाध्य रोगों को लेकर गोस्वामी जी आगाह करते हैं-

एक ब्याधि बस नर मरहिं ए असाधि बहु ब्याधि,
पीड़हि संतत जीव कहुँ सो किमि लहै समाधि।

अर्थात् इनमें से एक ही रोग हो जाए तो मनुष्य मर जाता है फिर ये तो अनेक असाध्य रोग हैं जो जीव को निरंतर पीड़ा पहुँचाते रहते हैं। इनके होते हुए प्राणी शांति कैसे पा सकता है !

मन की व्याधियों से मुक्ति का सरल एवं श्रेष्ठ उपाय मन को अन्यत्र लगाना है। व्यावहारिक रूप में भी यदि मन को कहीं एक जगह लगा दिया जाए तो बाकी बातों से उसका ध्यान हट जाता है। यहाँ तक कि किसी चिन्तन में मग्न होने पर व्यक्ति अपने आसपास से बेख़बर हो जाता है और कई बार बुलाने पर भी आवाज को सुन नहीं पाता। मन को भगवत्भक्ति जैसे सत्कार्य में लगाकर श्रीराम की कृपा रूपी औषधि ही इन रोगों से निजात पाने का एकमात्र उपचार है।

रामकृपा नासहिं सब रोगा, जौं एहि भाँति बनै संजोगा।

गोस्वामी जी ने रामकृपा पाने के उपाय का वर्णन स्वयं श्रीराम प्रभु के मुख से कराया है। लंका में अपमानित होकर विभीषण जब राघवेंद्र की शरण में आते हैं तब भक्तवत्सल प्रभु उन्हें अपने स्वभाव से परिचित कराते हैं और अपनी शरण में आने के उपायों का उपदेश देते हैं-

जौं नर होइ चराचर द्रोही, आवै सभय सरन तकि मोही।
तजि मद मोह कपट छल नाना, करउँ सद्य तेहि साधु समाना।
जननी जनक बंधु सुत दारा, तनु धनु भवन सुहृद परिवारा।
सब कै ममता ताग बटोरी, मम पद मनहिं बाँध बरि डोरी।
समदरसी इच्छा कछु नाहीं, हरष सोक भय नहिं मन माहीं।
अस सज्जन मम उर बस कैसे, लोभी हृदय बसइ धनु जैसे।
तुम्ह सारिखे संत प्रिय मोरे, धरउँ देह नहिं आन निहोरे।
सगुन उपासक परहित निरत नीति दृढ़ नेम,
ते नर प्रान समान मम जिन्ह के द्विज पद प्रेम।

श्रीराम प्रभु कहते हैं कि सारे जड़ चेतन जगत का द्रोही मनुष्य भी यदि मेरी शरण में आ जाता है, मद-मोह, छल-कपट त्याग देता है तो मैं उसे साधु के समान कर देता हूँ। माता, पिता, भाई, पुत्र, स्त्री, शरीर, धन, घर, मित्र और परिवार की ममता के धागों को बटोरकर एक डोरी बना लें, इस डोरी से अपने मन को मेरे चरणों में बाँध दे यानी सारे सांसारिक सम्बन्धों का केंद्र मुझे बना ले, जो समान दृष्टि वाला है, जिसे कोई इच्छा नहीं है, जिसके मन में हर्ष, शोक और भय नहीं है ऐसा सज्जन व्यक्ति मेरे मन में वैसे ही बसता है जैसे लोभी के मन में धन ! जो भगवत्भक्त हैं, दूसरों के हित में लगे रहते हैं, नीति और नियमों में दृढ़ हैं वे मुझे प्राणों के समान प्रिय हैं। मैं ऐसे तुम्हारे जैसे लोगों के लिए ही देह धारण करता हूँ।

सुनने में यह उपाय भले ही सरल लगे परंतु इसे अपनाना इतना आसान नहीं है। मन को अनेक शंकाएँ घेर लेती हैं। इसीलिए 'तबहिं होइ सब संसय भंगा, जब बहु काल करिअ सतसंगा।'

नित्य निरंतर सतसंग, हरिकथा श्रवण से ही मोह को भगाया जा सकता है और मोह को दूर किए बिना श्रीराम के चरणों में अचल प्रेम नहीं हो सकता-

बिनु सतसंग न हरिकथा तेहि बिनु मोह न भाग,
मोह गए बिनु राम पद होइ न दृढ़ अनुराग।

मन से मोह रूपी अज्ञान को भगाने के लिए लक्ष्मण-केवट संवाद के माध्यम से गोस्वामी जी ने ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का महान उपदेश दिया है। वनवास के समय श्रृंगवेरपुर में श्रीराम और सीता रात्रि के समय पर्णकुटी में शयन कर रहे हैं। बाहर लखनलाल पहरे पर हैं तभी निषादराज वहाँ आते हैं और राम-जानकी को कष्ट उठाते देख कैकेयी को कोसने लगते हैं। तब लक्ष्मण उन्हें समझाते हैं-

काहु न कोउ सुख दुख कर दाता, निज कृत करम भोग सबु भ्राता।
जोग वियोग भोग भल मंदा, हित अनहित मध्यम भ्रम फंदा।
जनमु मरनु जहँ लगि जग जालू, संपति बिपति करमु अरु कालू।
धरनि धामु धनु पुर परिवारू, सरगु नरकु जहँ लगि ब्यवहारू।
देखिअ सुनिअ गुनिअ मन माहीं, मोह मूल परमारथु नाहीं।
सपनें होइ भिखारि नृपु रंकु नाकपति होइ,
जागें लाभु न हानि कछु तिमि प्रपंच जियँ जोइ।
अस बिचारि नहिं कीजिअ रोसू, काहुहि बादि न देइअ दोसू।
मोह निसा सब सोवनिहारा, देखिअ सपन अनेक प्रकारा।
एहिं जग जामिनि जागहिं जोगी, परमारथी प्रपंच बियोगी।
जानिअ तबहिं जीव जग जागा, जब सब बिषय बिलास बिरागा।
होइ बिबेकु मोह भ्रम भागा, तब रघुनाथ चरन अनुरागा।
सखा परम परमारथु एहू, मन क्रम बचन राम पद नेहू।
राम ब्रह्म परमारथ रूपा, अबिगत अलख अनादि अनूपा।
सकल बिकार रहित गतभेदा, कहि नित नेति निरूपहिं बेदा।
सखा समुझि अस परिहरि मोहू, सिय रघुबीर चरन रत होहू।

हे भाई ! कोई किसी को सुख-दुख नहीं देता, सब अपने कर्मों का फल भोगते हैं। मिलना, बिछुड़ना, अच्छे-बुरे भोग, शत्रु, मित्र और उदासीन ये सभी भ्रम के फंदे हैं। जन्म-मृत्यु, सम्पत्ति-विपत्ति,

कर्म और काल यह सभी जगत के जंजाल हैं। जमीन, जायदाद, घर, नगर, परिवार, स्वर्ग, नर्क आदि व्यवहार, देखने, सुनने और मन के विचार इन सबका मूल कारण मोह यानी अज्ञान है क्योंकि परमार्थतः ये नहीं हैं। वे उदाहरण देकर समझाते हैं कि जैसे सपने में राजा भिखारी हो जाय या कंगाल स्वर्ग का स्वामी इन्द्र हो जाय, तो जागने पर लाभ या हानि कुछ भी नहीं है, वैसे ही इस दृश्य-प्रपंच को हृदय से मानना चाहिए।

ऐसा विचारकर क्रोध नहीं करना चाहिए और न किसी को व्यर्थ दोष देना चाहिए। सब लोग मोह रूपी रात्रि में सो रहे हैं और सोते हुए उन्हें अनेक स्वप्न दिखाई देते हैं। इस जगत रूपी रात्रि में परमार्थी और मायावी जगत से छूटे हुए योगी लोग जागते हैं। इस संसार में जीव को जागा हुआ तभी जानना चाहिए जब उसे भोग-विलासों से वैराग्य हो जाय।

लखनलाल उपदेश दे रहे हैं कि हे सखा ! विवेक होने पर मोहरूपी भ्रम भाग जाता है तब अज्ञान का नाश होने पर श्रीराम के चरणों में प्रेम होता है। मन, वचन और कर्म से श्रीराम प्रभु के चरणों में प्रेम होना ही सर्वश्रेष्ठ पुरुषार्थ है।

वे रघुनाथ जी के स्वरूप का वर्णन करते हुए कहते हैं कि श्रीराम जी परमार्थस्वरूप परमवस्तु परब्रह्म हैं। वे जानने में न आने वाले, स्थूल दृष्टि से दिखाई न देने वाले, आदिरहित, जिनकी उपमा नहीं दी जा सकती ऐसे उपमा रहित, सभी विकारों से रहित और भेदशून्य यानी भेदभाव न करने वाले हैं। वेद 'नेति-नेति' अर्थात् जिनकी इति नहीं है कहकर इनका निरूपण करते हैं।

और लक्ष्मण जी अपनी बात का निचोड़ बताते हैं कि हे सखा ! ऐसा समझ, मोह त्याग कर श्रीसीतारामजी के चरणों में प्रेम करो।

और, अंत में गोस्वामी जी के उस विजयी रथ की बात जिसमें सवार होकर जीवन के संग्राम में जन्म-मृत्यु रूपी महान दुर्जय शत्रु को भी जीता जा सकता है। राम-रावण युद्ध में रावण को रथ पर और श्रीराम को बिना रथ के देखकर विभीषण अधीर होकर भगवान से पूछते हैं कि आपके न रथ है, न तन की रक्षा करने वाला कवच है और न ही पदत्राण यानी जूते हैं। वह बलवान रावण कैसे जीता जाएगा? तब श्रीराम जी उसे समझाते हैं कि जिससे विजय प्राप्त होती है वह रथ दूसरा है। भगवान उस रथ का वर्णन करते हैं-

सौरज धीरज तेहि रथ चाका, सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका।
बल बिबेक दम परहित घोरे, छमा कृपा ममता रजु जोरे।
ईस भजनु सारथी सुजाना, बिरति चर्म संतोष कृपाना।
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा, बर बिग्यान कठिन कोदंडा।
अमल अचल मन त्रोन समाना, सम जम नियम सिलीमुख नाना।
कवच अभेद बिप्र गुर पूजा, एहि सम बिजय उपाय न दूजा।

शौर्य और धैर्य उस रथ के पहिए हैं। सत्य और सदाचार उसकी मजबूत ध्वजा और पताका हैं। बल, विवेक, इंद्रियों का वश में होना और परोपकार घोड़े हैं जो क्षमा, दया और समतारूपी डोरी से रथ में जुड़े होते हैं। ईश्वर का भजन ही चतुर सारथि है। वैराग्य ढाल है और संतोष तलवार है। दान फरसा है, बुद्धि प्रचंड शक्ति है, श्रेष्ठ विज्ञान कठिन धनुष है। निष्पाप और स्थिर मन तरकस के समान है। शम यानी मन का वश में होना, अहिंसा आदि यम और शौच आदि नियम ये बहुत से बाण हैं। गुरुओं का पूजन अभेद्य कवच है, इसके समान विजय का दूसरा कोई उपाय नहीं है।

विजय रथ के वर्णन के बाद श्रीराम मित्र को आश्वस्त करते हैं कि-

महा अजय संसार रिपु जीति सकइ सो बीर,
जाकें अस रथ होइ दृढ़ सुनहु सखा मतिधीर।

हे धीरबुद्धि सखा ! सुनो, जिसके पास ऐसा मजबूत रथ हो, वह वीर संसार रूपी महान दुर्जय शत्रु को भी जीत सकता है।

तो, आइए, श्रीरामचरितमानस के मार्गदर्शन में जीवन संग्राम में अपनी विजय पताका लहराएँ।

--------■ ■--------

रघुकलश के संभागीय ब्यूरो प्रमुख

सामाजिक बंधु रघुकलश में रचनाएं और सामाजिक समाचार, ग्राहक बनने एवं विज्ञापन के लिए संभागीय ब्यूरो प्रमुखों से संपर्क कर सकते हैं। उनके नाम और फोन नम्बर इस प्रकार हैं-

ग्वालियर-चंबल संभाग ब्यूरो प्रमुख : ओमवीर सिंह रघुवंशी, मो.09893247389, 09171582598

इंदौर ब्यूरो प्रमुख : राजेश रघुवंशी, मो. 09826578006, रणवीर सिंह रघुवंशी मो. 08959811503, 09522222841

उज्जैन ब्यूरो प्रमुख : चैन सिंह रघुवंशी, मो.09685574723

खानदेश ब्यूरो प्रमुख : डॉ. महेन्द्र जयपाल सिंह रघुवंशी, नंदूरबार महा. मो. 09423942750

विदर्भ ब्यूरो प्रमुख : दिलीप सिंह रघुवंशी, मो. 08485031185, 09960129404

धूलिया ब्यूरो प्रमुख : आलोक विजय सिंह रघुवंशी, धूलिया महा. मो. 09421991991

अकोला ब्यूरो प्रमुख: संजय रघुजीत सिंह रघुवंशी, मो. 09850509244

अहमदनगर ब्यूरो प्रमुख : पी.एम. रघुवंशी, मो. 09922079523, 09637081936

--पेज 01 का शेष

आध्यात्मिकता के लिए जरूरी है शुद्धता

यह भी सच है कि बहुतों के लिए शुद्धीकरण पहली आवश्यकता होती है,-निरन्तर आंतरिक अनुभूति आरम्भ होने से पूर्व कुछ चीजों को मार्ग से हटाना अनिवार्य हो जाता है। परन्तु मुख्य आवश्यकता है चेतना की कुछ मात्रा में तैयारी ताकि वह उच्चतर शक्ति को अधिक से अधिक मुक्त रुप से प्रत्युत्तर देने में समर्थ हो सके। इस तैयारी में अनेक चीजें उपयोगी बन सकती हैं- काव्य तथा संगीत- जो तुम कर रहे हो- मदद कर सकते हैं, क्योंकि यह सब श्रवण तथा मनन का काम करता है। यदि भावना में तीव्रता भी आ जाती हो तो वह एक प्रकार से सहज निदिध्यासन बन जाता है। चैत्य तैयारी, मानसिक तथा प्राणिक अहंकार के स्थूलतर रुपों की सफाई, मन तथा हृदय का गुरु के प्रति उद्घाटन तथा अनेक अन्य चीजें बहुत अधिक सहायक होती हैं-यद्यपि यह पूर्णता या द्वन्द्वों अथवा अहंकार से पूर्ण मुक्ति नहीं है- जो कि अपरिहार्य प्रारंभिक आवश्यकता होती है- बल्कि आंतरिक सत्ता की यह मात्र तैयारी और एक क्षमता होती है जिससे आध्यात्मिक प्रत्युत्तर तथा प्राप्ति संभव हो जाते हैं।

श्रीअरविंद का कहना है कि निम्न प्रकृति तथा इसकी बाधाओं पर अधिक सोच विचार करना भूल है, क्योंकि यह साधना का नकारात्मक पहलू है। उन पर नजर रखनी चाहिये और उनकी शुद्धि करनी चाहिये, किन्तु उन्हें बहुत महत्व देकर उनमें ध्यानमग्न रहने से कोई मदद नहीं मिलती। चेतना के अवतरण की अनुभूति का सकारात्मक पक्ष अधिक महत्वपूर्ण वस्तु है। यदि व्यक्ति सकारात्मक अनुभूति का आह्वान करने से पूर्व निम्न प्रकृति के सम्पूर्ण और स्थायी रुप से शुद्धीकरण की प्रतीक्षा करता है तो संभवत: उसे हमेशा के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ जाये। यह सच है कि जितनी अधिक निम्न प्रकृति शुद्ध होगी उतना ही उच्चतर प्रकृति का अवतरण आसान होगा। परन्तु यह भी सच है, बल्कि अधिक सच है कि उच्चतर प्रकृति का जितना अधिक अवतरण होगा, निम्न प्रकृति का उतना ही अधिक शुद्धीकरण होगा। न तो पूर्ण शुद्धीकरण और न स्थायी तथा पूर्ण अभिव्यक्ति एकदम तुरन्त आ सकती है। यह समय तथा धैर्य के साथ प्रगति की बात है। ये दोनों :शुद्धीकरण तथा अभिव्यक्ति: साथ-साथ प्रगति करते रहते हैं तथा एक दूसरे के हाथों में क्रीड़ा करने के लिए अधिकाधिक समर्थ बनते जाते हैं- यही साधना की सामान्य प्रक्रिया है।

श्रीअरविंद कहते हैं कि हमारी प्रकृति न केवल संकल्प और ज्ञान के क्षेत्र में भ्रान्त है बल्कि शक्ति के क्षेत्र में भी दुर्बल है। किन्तु भागवत शक्ति यहां मौजूद है और यदि हम इसमें श्रद्धा रखें तो यह हमें मार्ग दिखलायेगी तथा यह भागवत प्रयोजन की पूर्ति के लिए हमारी त्रुटियों और हमारी क्षमताओं दोनों का उपयोग करेगी। यदि हम अपने तात्कालिक लक्ष्य में विफल हो जाते हैं, तब इसका अर्थ है कि वे विफलता ही चाहते थे। प्राय: यह देखा गया है कि हमारी विफलता या दुष्परिणाम उस स्थिति की अपेक्षा महत्तर सत्य तक पहुंचने का सही मार्ग होता है जब हमें तत्काल सफलता मिल जाती। यदि हमें दु:ख होता है तो इसका कारण यह है कि हमारे अंदर किसी चीज को आनंद की एक दुर्लभ संभावना के लिए तैयारी करने की आवश्यकता है। यदि हमें ठोकर लगती है तो इसका अर्थ यह है कि एक पूर्णतर तरीके से चलने की कला हमें अन्त में सीखनी शेष है। शान्ति, शुद्धि तथा पूर्णता प्राप्त करने के लिए हमें अत्याधिक उग्रता के साथ जल्दी नहीं मचानी चाहिए। शान्ति हमें निश्चित रुप से प्राप्त करनी होगी लेकिन वह शान्ति नहीं जो खोखली या उजाड़ प्रकृति की होती है या वैसी मृत या विकृत क्षमताओं की होती है जो अशान्ति को वहन करने में असमर्थ होती है, क्योंकि हमने उन्हें उत्कटता, अग्नि तथा शक्ति के अयोग्य बना दिया है। शुद्धि निश्चय ही हमारा लक्ष्य होगी किन्तु वह शुद्धि नहीं जो खाली शून्य या निर्जनता में तथा जड़ बना देने या जमा देने वाली शीतलता में होती है। पूर्णता की हमसे मांग की जाती है लेकिन वह पूर्णता नहीं जो संकीर्ण दीवारों में बंद सीमित कार्यक्षेत्र में ही जीवित रह सकती है या जो अनन्त की निरंतर आत्म विस्तारित होती हुई सूची पर मनमाना पूर्णविराम लगा देती है। हमारा उद्देश्य है भागवत प्रकृति में रुपान्तर, भागवत प्रकृति कोई मानसिक या नैतिक अवस्था नहीं, आध्यात्मिक स्थिति है जिसे उपलब्ध करना कठिन कार्य है। हमारे कर्म, हमारे योग के ''प्रभु'' जानते हैं कि कर्तव्य कर्म क्या है और हमें अपने अंदर यह कार्य उन्हें अपने साधनों द्वारा तथा अपने ही तरीके से करने देने की छूट देनी होगी।

श्रीअरविन्द कहते हैं कि सामान्य स्थिति में, साधारण सत्ता और साधारण जीवन में, पुरुष प्रकृति के, बाह्य प्रकृति के अधीन होता है, वह उसका गुलाम होता है तो उसकी गुलामी से अपने आपको मुक्त कर लेना काफी नहीं है। उसे अपनी निष्ठा बनाये रखनी चाहिये लेकिन प्रकृति की आज्ञा का पालन करने की जगह उसे दिव्य जननी की आज्ञा माननी चाहिये यानी अपने से किसी नीची चीज का हुकुम मानने की जगह उसे उच्चतर चीज का हुकुम मानना चाहिये।

-अरुण पटेल

--------■ ■--------

सीता, द्रोपदी, वेदवती का अग्नि से सम्बंध

मनोज कुमार श्रीवास्तव

यह ध्यान दें कि अग्नि को पौरुषीकृत किया गया था, लेकिन भारत में सीता, द्रोपदी, वेदवती तीनों का अग्नि से एक विशेष सम्बंध है। सिमोन द बुवा 'द सेकंड सेक्स' (186) में लिखती हैं- The very powers that are firghtening in wild beasts or in unconquered elements become qualities valuable to the owner able to domesticate them. From the fire of the wild horse, the violence of lightening, man has made means to prosperity. 'लेकिन भारत में स्त्री में भी यह अग्नि देखी गई। सिमोन लिखती हैं कि Patriarchal civilization dedicated woman to chastity. इसलिए अग्नि-परीक्षा के इस प्रसंग में सीता की पवित्रता का उद्घोष पितृसत्तात्मकता का साक्ष्य बताया जाता है किन्तु सच्चाई यह है कि राम भी उतने ही पवित्र हैं, एकनिष्ठ हैं। रघुवंश में प्रसंग आता है जब सीता की सखी वासन्ती उनके द्वारा राम का स्मरण कर विह्वल होने पर कहती है कि सखि! तुम ऐसे निष्ठुर राम का स्मरण कर क्यों दीर्घ एवं ऊष्ण उच्छवास लेती हो। तब सीता कहती है कि सखि! राम निष्ठुर नहीं है। मैं बहिरंग दृष्टि से ही उनसे दूर हूं। वस्तुतः उनके हृदय की रानी मैं ही हूं। सखि, श्रीराम के हृदय को अन्य किसी स्त्री का श्वास कभी स्पर्श नहीं कर सका।' राम सिर्फ नीति के ही नहीं, प्रीति के भी अवतार पुरुष हैं। अग्नि-प्रसंग सीता के साथ-साथ राम के असाधारणत्व का भी प्रसंग है। देवता उनसे कहते हैं : राम! आप संपूर्ण विश्व के उत्पादक हैं। ज्ञानियों में श्रेष्ठ और सर्वव्यापक हैं। फिर इस समय आग में घिरी हुई सीता की उपेक्षा कैसे कर रहे हैं। अपनी असाधारणता को पहचान कर ही सीता की, अपनी पत्नी की असाधारणता के साथ न्याय हो सकता है। पत्नी जो मन काया और वचन से राममय है, अपने पति में मग्न। पति जो उसका ईश्वर है यह नहीं, ईश्वर जो उसका पति है। उस पर विपत्ति कैसे आएगी, ऐसे पति के रहते। मन-क्रम वचन से ध्यान करने पर तो संकट से हनुमान ही छुड़ा सकते हैं : 'संकट तें हनुमान छुड़ावें/मन क्रम वचन ध्यान जो लावै।' इसलिए तुलसी की यही सीख है। मन क्रम वचन की एकग्रता। यदि हनुमान के प्रति मन क्रम वचन को एकाग्र करने पर संकट से उनके द्वारा छुड़ा लिया जाता है तो राम के प्रति वचन काया और मन की एकाग्रता में तो विपत्ति आएगी ही नहीं। तुलसी का कहना है : 'मन क्रम वचन छाड़ि चतराई/भजत कृपा करिहहि रघुराई।' सीता तो उस अखंडता के साथ राम में ही लौ लगाए हुए हैं। लक्ष्मण-निषाद संवाद में यही तो कहते हैं लक्ष्मण : 'सखा परम परमारथ एहू। मन क्रम वचन राम पद नेहू।' यदि राम यह कहते हैं कि मन वचन और काया से जो मुझमें ही आश्रय लिए हुए तो उसे विपत्ति कैसे आ सकती है। तो रामभक्त भी यह सोचता है कि ''मन क्रम वचन चरन रत होई/कृपासिंधु परिहरिअ कि सोई।'' कि जो मन कर्म और वचन से आपके चरणों में लीन हो, हे कृपासिंधु क्या उसे छोड़ देना चाहिए। इस भक्त की स्थिति क्या है? ''मोरे सबइ एक तुम्ह स्वामी/दीनबंधु उर अंतर जामी।'' सीता जानती थीं कि वही व्यक्ति विश्वसनीय है जो मन क्रम वचन से कृपासिंधु का दास है। हनुमान के बारे में उनके मन में विश्वास ऐसे ही उपजा था : 'जाना मन क्रम वचन यह कृपासिंधु कर दास।' सीता अग्नि के समक्ष भी इसीलिए अप्रतिहत रहती हैं क्योंकि उनके भीतर भी मन, वचन और काया से रामनिष्ठा का ही विश्वास था। शिर्डी के साई कहा करते थे, 'मुझ में लीन वचन मन काया/उसका ऋण न कभी चुकाया।' भरत को भी राम इसी तरह प्रिय थे : ''मातु भरत के वचन सुनि सांचे सरल सुभायँ/कहति राम प्रिय तात तुम्ह सदा वचन मम कायँ।'' जैसे सीता की इसी एकाग्रता के कारण अग्नि शीतल हो गई वैसे ही भरत की इसी एकाग्रता के कारण उनके एक निष्फलक बाण से मूर्च्छित हुए हनुमान उठ बैठते हैं : ''जो मोरे मन बच अरु काया/प्रीति राम पद कमल अमाया। तौ कपि होउ बिगत श्रम सूला/जौं मो पर रघुपति अनुकूला।

आज हम स्वयं अपनी स्थिति क्या देखते हैं? हममें से अधिकांश के व्यक्तित्व में यह भ्रंश है। वचन से यदि भजन निकल रहा है तो मन कहीं और यात्रा कर रहा है। काया से हम मंदिर में बैठे हैं और मन कोई और जुगत जमा रहा है। बहुत सी फाल्ट लाइंस विकसित हो गयी हैं। हम कहते कुछ हैं, करते कुछ हैं। यही नहीं, वचनों में भी अंतर्विरोध है। एक आदमी के भीतर एक मन भी नहीं है, अनेक हैं। जैसे हम हमेशा संक्रमण में हैं। ट्रांजीशन में। बल्कि डिस्इंटीग्रेशन में। व्यक्तित्व का विन्यास नहीं विखंडन। उधर सीता का प्रेम अखंडित है। वह सिर्फ सामाजिक मान्यताओं के आधार पर गठित नहीं है। उसमें प्रकृति, व्यक्ति और संस्कृति सब समरस हो गए हैं। एक निष्कम्प विवेक से। अस्तित्व की अन्तर्निष्ठता। कोई तनाव नहीं कोई विचलन नहीं राम ही सीता का सत्य है। जिद्दू कृष्णमूर्ति कहा करते थे कि All conflict, all becoming is disintegration. सीता हो नहीं रहीं। राम हो नहीं रहे। वे एक

दूसरे का सत्य हैं, अस्ति हैं। इसलिए देवता राम को उनके अस्तित्व का सत्य बताते हैं। उनका विष्णु और सीता का लक्ष्मी होना। राम का असल स्तर वह है इसलिए जब वे इस स्तर की बात नहीं बोलते तो सीता को वे बातें ओछी लगती हैं। चाहे अयोध्या में वन गमन प्रसंग में, चाहे युद्धकांड के अग्नि प्रसंग में राम और सीता का सदा सायुज्य है। राम और सीता का सदा संगम है। वे अविभाज्य हैं।

राम के मुख से इस कथन को सकारात्मक (affirmative) तरीके से न कहलवाकर तुलसी ने प्रश्नवाचक तरीके से क्यों कहलवाया है? क्या एक सीधाा कथन राम के द्वारा की गई दंभोक्ति की तरह लगता? क्या यह एक प्रश्नवाची शब्द सीता के वियोग से श्रीहीन हो गए मानवी राम का आत्म संदेह है? जिस राम का नाम लेकर भक्त लोग कहते रहें हों -मैं केहि कहौं बिपति अति भारी/श्री रघुबीर धीर हितकारी- उसकी अपनी पत्नी विपदा में? कभी-कभी यह लगता है कि जिस तरह से दुख में रामपरायण भक्त आर्त और क्लान्त होता है, उसी तरह से उसका आराध्य कैसे दुखी हो सकता है? भक्तों ने तो फिर भी इसके लिए औचित्य ढूंढ कर खुद को सांत्वना दे ली कि भगवान अपने भक्तों की परीक्षा लेते हैं, लेकन ईश्वर जानता है कि उसने अपने भक्तों को कभी संत्रस्त नहीं किया। जिस तरह से सीता की अग्नि परीक्षा लिए बिना राम पर अग्नि परीक्षा लेने का आरोप लगा, उसी तरह से हो सकता है कि भक्तों को विपदा से निकालने वाले पर ही विपत्ति में डालने का भी आरोप लगा हो। प्रार्थना भी एक तरह की शिकायत बन गई हो। उधर स्वयं ईश्वर भी शायद इस उदासी में घिर गया हो कि उसे चाहने वाले भी उसे ही अपनी दुरावस्था का कारण मानते हैं। राम के स्वर में तुलसी ने कैसी कातरता और मार्मिकता सी ला दी है और इसमें संदेह नहीं कि राम पर ये बादल घुमड़ते तो हैं। लक्ष्मण, विभीषण, सुग्रीव, हनुमान सभी उनके इन बादलों में अपनी अपनी तरह से यूर्थ की आभा लाते हैं। अरण्यकांड के 66वें सर्ग में लक्ष्मण राम को समझाते हैं और 'विपत्ति' का उल्लेख भी करते हैं : ''नरश्रेष्ठ! आप धैर्य धारण करें! संसार में किस प्राणी पर विपदाएं नहीं आतीं। राजन! विपदाएं अग्नि की भांति एक क्षण में स्पर्श करतीं और दूसरे ही क्षण में दूर हो जाती हैं..... यह लोक का स्वभाव ही है कि यहां सब पर दुख शोक आता जाता रहता है। श्रीराम! आप जैसे सर्वज्ञ पुरुष बड़ी से बड़ी विपत्ति आने पर भी कभी शोक नहीं करते हैं।'' किष्किंधा कांड के सातवें सर्ग में सुग्रीव राम को समझाते हैं : ''इस तरह मन में व्याकुलता लाना व्यर्थ है, जो मूढ़ मानव सदा घबराहट में ही पड़ा रहता है वह पानी में भार से दबी नौका के समान शोक में विवश होकर डूब जाता है, शोक को अपने ऊपर प्रभाव डालने का अवसर न दें। जो शोक का अनुसरण करते हैं, उन्हें सुख नहीं मिलता है और उनका तेज भी क्षीण हो जाता है, अतः आप शोक न करें। राजेन्द्र! शोक से आक्रान्त हुए मनुष्य के जीवन में भी संशय उपस्थित हो जाता है? इसलिए आप शोक को त्याग दें और केवल धैर्य का आश्रय लें।'' युद्धकांड के दूसरे सर्ग में भी सुग्रीव व राम को यह कहकर उत्साहित करते हैं : ''राजन! आप इस व्याकुल बुद्धि का आश्रय न लें- बुद्धि की इस व्याकुलता को त्याग दें, क्योंकि यह समस्त कार्यों को बिगाड़ देने वाली है और शोक इस जगत में पुरुष के शौर्य को नष्ट कर देता है। मनुष्य को जिसका आश्रय लेना चाहिए, उस शौर्य का ही वह अवलंबन करें, क्योंकि वह कर्ता को शीघ्र ही अलंकृत कर देता है। कोई वस्तु खो गयी हो या नष्ट हो गयी हो, उसके लिए आप जैसे शूरवीर महात्मा पुरुषों को शोक नहीं करना चाहिए क्यांकि शोक सब कामों को बिगाड़ देता है।'' राम यदि सर्वान्तर्यामी है तो वे सीता के मन का हाल जानते ही होंगे जिसके तहत सीता त्रिजटा से भी बोली थीं- 'मातु बिमति संगिनि तैं मोरी।' विपत्ति ही सीता की संगिनी हो गई है और शायद इसीलिए वे भी उदास हो जाते हैं। जो सीता राम की संगिनी थीं वे अब विपत्ति को अपनी संगिनी बता रही हैं, राम के लिए इससे बड़ी पराजय क्या होगी?

राम के दुख को पहचानते हैं हनुमान। इसलिए उनके मन को पढ़कर ही जैसे कहते हैं कि विपत्ति तो तब है जब आपका स्मरण या भजन न हो। सीता तो लगातार राम स्मरण में ही डूबी हुई हैं। हनुमान ने सुंदरकांड के 16वें सर्ग के 25वें श्लोक में स्वयं नोट किया :''ये न तो राक्षसियों की ओर देखती हैं और न इन फल फूल वाले वृक्षों पर ही दृष्टि डालती हैं, सर्वथा एकाग्रचित्त हो मन की आंखों से केवल श्रीराम का ही निरन्तर दर्शन यानी ध्यान करती हैं- इसमें संदेह नहीं है।'' उन्नीसवें सर्ग के 8वें श्लोक में फिर उनके 'राम के ध्यान में डूबे रहने' की बात आई है। राम-स्मरण ही सबसे बड़ी संपत्ति है। राम-विस्मरण ही विपत्ति। जयशंकर प्रसाद ने चंद्रगुप्त में कहा था-''स्मृति जीवन का पुरस्कार है।'' राम की स्मृति तो अपने आप में और भी बड़ा पुरस्कार होगा। 'फिराक' को तो यह नुस्खा और पता है कि ''तबीयत अपनी घबराती है जब सुनसान रातों में/हम ऐसे में तेरी यादों की चादर तान लेते हैं।' गीत गोविन्दम् में भी 'यदि हरिस्मरणे सरसं मनः' की शर्त थी-यदि सरस मन में हरि का स्मरण है। सीता अपनी स्मृतियों के साथ अकेली रह गई हैं। राम के साथ तो फिर भी समभावी लोगों का एक समाज है। सीता निबिड़ एकान्त में हैं जिसके चारों ओर दुष्ट शक्तियों के पहरे और साजिशें हैं। सिर्फ चादें ही हैं जो उनके साथ हैं। इन्हीं की ऊष्मा, इन्हीं की ठंडक। सीता अपनी इन यादों को किसी के साथ शेयर नहीं कर सकतीं। लेकिन वे चित्र उनकी आंखों के सामने सजीव हो उठते हैं। इन यादों का न होना ही असल आपदा है। ये यादें सीता की संजीवनी हैं। ये यादें सीता की, अपने आसपास की भयावहताओं के विरुद्ध, प्रत्यौषधि हैं। ये यादें सीता के मन की ग्रहकक्षा में निरन्तर चक्कर लगाती हैं। इन यादों का दरिया सीता के

मन में बहता रहता है। सीता के मन की भृंगी को इन्हीं यादों के पुष्पों से अपना जीवन-मधु चुनना है। राम धनुर्भग करते हुए, राम उनकी मांग भरते हुए, राम अग्नि के उनके साथ फेरे लेते हुए, राम मृगछौनों के साथ खेलती हुई सीता को मुग्ध होकर देखते हुए, कनेर से फूल चुनती हुई सीता को निहारते राम, गोदावरी के तट पर खड़ी सीता को आंख भर देखते राम, शिलाताल पर उदारशीला सीता के साथ बैठे राम, वन में वैदेही के केशों में लगाने के लिए फूल चुनते राम, खर दूषण का सेना सहित मार गिराने पर सीता के द्वारा आलिंगित राम, सीता के अनुरोध को मानकर स्वर्ण मृग को मारने धनुष बाण सहित प्रस्थित राम- राम की यादों की शहनाई सीता के कानों में लगातार गूंजती रहती है। सीता की प्यास राम की स्मृतियों के इसी मधुघट से बुझती है। अब जैसे सीता ने यादों के एक-एक तिनके को इकट्ठा कर अपना एक अलग ही घोंसला बना लिया है। इसी व्यक्तिगत अर्थ में सीता द्वारा राम के सुमिरन का महत्व है। सुमिहर का एक dogmatized अर्थ भी है। श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि/श्रीरामचंद्रचरणौ शिरसा नमामि/श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये। रामरक्षास्तोत्र के शब्द। सीता तो मन, वचन और कर्म से वैसे भी राम में ही लीन हैं, उन्हें समर्पित हैं, वे ही उनकी गति हैं, उनकी शरण। इसलिए न केवल शास्त्रीय रुप से बल्कि निहायत व्यक्तिगत रुप से सीता राममय हो गई हैं। भक्तों के लिए तो 'सिया राममय सब जग जानी' का परामर्श हो, लेकिन स्वयं 'सिया' को तो सब कुछ राममय ही नजर आता है। जैसे राम को सीता से बिछुड़ने पर पूरी प्रकृति सीतामय नजर आती है। अरण्यकांड के 62वें सर्ग में राम का विलाप देखें। 'प्रिये! तुम्हें फूल अधिक प्रिय हैं, इसलिए खिली हुई अशोक की शाखाओं से अपने शरीर को छिपाती हो और मेरा शोक बढ़ा रही हो। देवि! मैं केले के तनों के तुल्य और कदलीदल से ही छिपे हुए तुम्हारे दोनों उरुओं को देख रहा हूं। तुम उन्हें छिपा नहीं सकती। भद्रे! तुम हंसती हुई कनेर-पुष्पों की वाटिका का सेवन करती हो। बंद करो इस परिहास को, इससे मुझे बड़ा कष्ट हो रहा है।' राम सीता के खोने पर प्रकृति के तत्वों से पूछते हैं। सूर्य से, वायु से। सूर्य से वे कहते हैं कि 'सूर्यदेव! संसार में किसने क्या किया और क्या नहीं किया- इसे तुम जानते हो, लोगों को सत्य-असत्य कर्मो के तुम्हीं साक्षी हो। मेरी प्रिया सीता कहां गयी अथवा उसे किसने हर लिया, यह सब मुझे बताओ, क्योंकि मैं उसके शोक से पीड़ित हूं। वायुदेव! समस्त विश्व में ऐसी कोई बात नहीं है जो तुम्हें सदा ज्ञात न रहती हो। मेरी कुलपालिनी सीता कहां है, यह बता दो। वह मर गयी, हर ली गई या मार्ग में ही है। बाद में रावण के मारे जाने के बाद सीता के मिलने पर पूरी प्रकृति सीता की साक्षी देती है। सूर्य और वायु भी सीता के पक्ष में कौल उठाते हैं। सीता ने राममय जाना प्रकृति को और राम ने सीतामय जाना उसे। इस रुप में उनके रिश्ते प्राकृतिक हैं। तो जिस स्मरण की बात यहां हनुमान कह रहे हैं, वह सिर्फ सांस्कृतिक स्मरण ही नहीं है, वैयक्तिक और नैसर्गिक भी है। यदि यह सुमिरन बना हुआ है तो सीता को कोई विपत्ति नहीं आ सकती।

-सुंदरकांड एक पुर्नपाठ भाग 11 से साभार

--------■ ■--------

पाषाण गाथा

मैं अभागा ऐसा निकला
दुनिया ने मुझको ठुकरा दिया
कभी किसी ने पूजा मुझको
कहीं किसी ने तोड़ दिया।
मैं अभागा.....
कभी कल्पना शिल्पकार की
मूर्ति में मुझे ढाल दिया
कहीं चित्रकारी के रंग में
मैं डूबा, उतरा गया।
मैं अभागा.....
कहीं नींव में डाला मुझको
कभी महल, रनिवासों में
कहीं बागियों की तोपों ने
खण्ड-खण्ड बिखरा दिया।
मैं अभागा.....
सदा रहा हूं अचल-दृढ़ मैं
इन्हीं भग्न अवशेषों में
हर इतिहास दोहरायेगा, मैं
ऐसा हूं पाषाण यहां।
मैं अभागा.....
युग बीते, युग बीत रहे हैं
सदियों तक युग बीतेंगे
मैं अकेला खड़ा रहूंगा
युग, युगों की गाथा गाने को।
मैं अभागा.....

-डा. स्वर्णसिंह रघुवंशी

बेईमान

मै बेईमानी के सहारे
आराम से जी रहा हूँ।
भौतिक संसाधनों को ओढकर,
ईमान को छोडकर
अपनी आत्मा को मारकर
सचमुच रिश्वत रस पी रहा हूँ।
सरकार ने मुझे बहुत सहारा दिया है।
वर्तमान मीडिया ने भी
कुछ आगे आसरा दिया है।
मानवाधिकार संगठनों ने भी कभी
हमें बेसहारा किया है।
पुलिस मुझ पर डंडे चला नहीं सकती
कोई शक्ति मुझे अब हिला नहीं सकती
सदियों तक ही आरक्षण पाता रहूँगा
भले ही पढाई में गधा हुआ तो क्या हुआ
मै गधा रहके भी यारों
सदा गुलाब जामुन खाता रहूँगा।
सरकार से मुझे क्या कुछ नहीं मिला
पढाई लिखाई नौकरी सब जगह
मेरी भरपूर पूछपरख है।
मेरी पूँछ हनुमान से कम नहीं है
अब मै लंका जलाने भी पूर्ण स्वतंत्र हूँ
कहीं आग लगाऊँ तुम कुछ
बिगाड़ नहीं सकते मेरा
जरा सी चिल्ल पों की तुमने
तुम्हारा कालकोठरी में डलवा दूंगा डेरा।
केवल झूठा नाम लेने से ही तुम्हें
जेल की हवा खिलबा दूंगा
तुम्हें क्या तुम्हारे पडोसियों को भी
सारी उम्र जेल में सड़वा दूंगा।
अब मेरे हाथ में ही
बहुत बड़ा हथियार आ गया है।
मै बेईमान था तो क्या हुआ
अब मेरे पास सरकार का भी
सरदार आ गया है।

इंजी शंम्भूसिंह रघुवंशी अजेय
मगराना, गुना, म.प्र.

श्रीराम रघुवंशी धर्मशाला-आरोन के अध्यक्ष बने-महेन्द्र सिंह रुसल्ला

गुना जिले के तहसील मुख्यालय-आरोन में स्थित-श्रीराम रघुवंशी धर्मशाला की नवीन कार्यकारिणी का गठन गत माह सम्पन्न हुआ। धर्मशाला के संरक्षक ट्रस्टी, ट्रस्टी,आजीवन सदस्य व सामान्य सदस्य जनों द्वारा-

आगामी निर्धारित कार्यकाल हेतु श्री महेन्द्र सिंह रघुवंशी रुसल्ला (दुर्गेश नन्दनी ट्रेवल्स वालों) को अध्यक्ष बनाया गया । इस कार्यकारिणी में -हरिओम रघुवंशीसेजी वाले सचिव एवं महेन्द्रपाल सिंहमूडरावाले कोषाध्यक्ष बनाये गये। साथ ही निवृत्तमान अध्यक्ष-श्री रामबाबू सिंह रघुवंशी(खामखेडा) को सम्मान-जनक विदाई दी गई ।

स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में रघुवंश के बढ़ते कदम

गुना जिला मुख्यालय की पत्रकार कॉलोनी में नव-निर्मित विशाल चिकित्सा संस्थान ''राम हाईटेक हॉस्पिटल'' का भव्य शुभारंभ हुआ। क्षेत्र एवं दूरदराज से आमंत्रित कई हजार लोगों की उपस्थिति में स्थानीय पंचमुखी हनुमान मंदिर के महन्त दासानुदास श्री श्री 1008 श्री सीतारामदास जी महाराज के कर-कमलों से हॉस्पिटल का उद्घाटन हुआ। विधि-विधान से उद्घाटन उपरांत महाराज श्री ने संस्थान के संस्थापक-संचालक डॉ. वाय.एस. रघुवंशी एवं राजकुमार सिंह रघुवंशी व परिजनों को शुभाशीष एवं उपस्थित जनों को मंगलकामनाएं दीं। इस अवसर पर स्थानीय व क्षेत्रीय अनेक विशिष्ट जनों ने संचालक द्वय को हार्दिक बधाईयां दीं। उल्लेखनीय है कि उक्त ''राम हाईटेक हॉस्पिटल'' गुना में वर्तमान आधुनिक चिकित्सा यंत्र व मशीनरीज की सुविधाओं के साथ योग्य व विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा उपचार की व्यवस्था रहेगी।

ओमवीर सिंह रघुवंशी, ब्यूरो प्रमुख ग्वालियर संभाग

पुरूष से पुरूषोत्तम की यात्रा

रामसिंह रघुवंशी

जीवन में कभी हम जो सोचते हैं वह होता नहीं और हम जो नहीं सोचते हैं वह हो ही जाता। मैं श्रीरामचरित मानस का एक दोहा यहां उद्धृत कर अपनी बात कहूंगा-

सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ।
हानि लाभ जीवन मरनु जस अजसु विधि हाथ।।

इसी प्रबल भावी ने हमारे साथ भी एक क्रूर मजाक कर दिया। हम जानते हैं बहुत कुछ अपने अनुकूल नहीं होता, प्रतिकूलताएं आती हैं, विषमताएं आती हैं, किन्तु कभी-कभी ये प्रतिकूलताएं-बिषमताएं हमारी सहनशक्ति के सर्वथा विपरीत हो जाती हैं और यही समय होता है जब बड़े-बड़े ज्ञानी, सहनशील भी धराशायी हो जाते हैं। हमारे परिवार में भी 10 जून 2017 को ऐसा ही हुआ जब हमारे ज्येष्ठ पुत्र के 14 वर्षीय पुत्र आराध्य का स्वर्गवास हो गया। इस घटना ने समूचे परिवार को अस्त-व्यस्त कर दिया। हमारी स्थिति ऐसी हो गई कि हम अपने आप को समझाएं कि अपनी पुत्रवधु और पुत्र को समझाएं उनकी पीड़ा माता-पिता की पीड़ा थी, इसी पीड़ा से बड़ी पुत्र-शोक की पीड़ा संसार में कोई हो नहीं सकती। इस घटना से व्याप्त उदासी और निराशा ने हमें भी पूरी तरह ध्वस्त कर दिया। दूसरों को समझाना, ढाढस बंधवाना अत्यन्त कठिन एवं पीड़ादायक होता है। मैंने जीवन में पहली बार समझा कि बड़प्पन और दायित्व बोध व्यक्ति की भावनाओं को किस प्रकार कुचल कर रख देता है। ईश्वर किसी को ऐसी त्रासदी न दे, यही प्रार्थना है।

लगभग एक वर्ष का समय लग गया परिस्थितियों को सामान्य होने में। इसी बीच मैं एक दिन ''रघुकलश'' उठाकर पढ़ने लगा, मैंने जब अपना लेख पढ़ा तो मुझे समय ने एकदम झकझोर दिया। जीवन और जगत के उल्टे वृक्ष के मर्म को समझकर पुनः लिखना प्रारंभ कर दिया। जब मैंने स्काटलैंड के प्रसिद्ध दार्शनिक ज्यौर्ज हैमिल्टन की एक उक्ति पढ़ी जिसमें वे कहते हैं ^^On earth, there is nothing so great as man. In Man there is nothing so great as mind. अर्थात् इस धराधाम में मानव सर्वश्रेष्ठ है और मानव के अन्दर बुद्धितत्व सर्वोपरि है। यह बुद्धि ही मानव शरीर के भीतर दैवीतत्व है, यही वह ज्योति है जिसके सहारे मानव अपने भावी मार्ग को देख सकता है। उचित और अनुचित में विवेध कर सकता है और दिव्यता के समीप बना रह सकता है।

हम जीवन और जगत के उल्टे वृक्ष अर्थात पुरुष से पुरुषोत्तम की यात्रा में जीवन के विभिन्न पहलुओं पर विचार करने जा रहे हैं। यह एक पहेली है जिसे बूझने-बुझाने का कार्य हमें इस चर्चा में करना है। मानव शरीर वास्तव में विधाता की अनमोल कृति है, अद्भुत है अविस्मरणीय है। जीवन के संबंध में विश्व में दो भिन्न एवं परस्पर विरोधी विचार प्रचलित हैं। एक विचार के अनुसार जीवन नीचे लुढ़कता हुआ प्रकृति के धरातल से एक हो जाता है और दूसरे विचार के अनुसार वह चढ़ता हुआ आत्मतत्व से मिल जाता है। प्रकृतिवादी समस्त जीवन जगत की प्रकृति का ही खेल कहता है। आत्मवादी उसे प्रकृति का भाग अथवा प्राकृतिक परिवर्तनों का परिणाम नहीं समझता। इसी आधार पर प्रकृतिवादियों को भोगवादी और आत्मवादियों को आदर्शवादी कहा जाता है। भोगवादी की दृष्टि केवल प्रत्यक्ष पर रहती है परन्तु आदर्शवाद, इसे पशुकोटि का जीवन समझकर प्रत्यक्ष या वर्तमान से ऊपर उठता है और अपनी बुद्धि की सहायता से प्रत्यक्ष के पीछे और आगे भी देखता है। वर्तमान जीवन उसकी दृष्टि में विशाल जीवन-श्रृंखला की एक कड़ी मात्र है। चीन देश की एक कहावत है कि यदि मनुष्य को एक वर्ष का प्रबंध करना है तो उसे अन्न की कृषि करना चाहिए, दस वर्षों का प्रबंध करना है तो फलदार वृक्ष रोपित करना चाहिए और यदि सदैव के लिए प्रबन्ध करना है तो अपने भीतर महापुरुष की सृष्टि करनी चाहिए। हमारी इस चर्चा का मूल विषय ही है पुरुष से पुरुषोत्तम की यात्रा।

पुरुषोत्तम की यात्रा का अर्थ ही महापुरुष की सृष्टि है। पुरुष से पुरुषोत्तम की यात्रा या आत्मा का परमात्मा में विलीनीकरण क्यों आवश्यक है? इसे जानने-समझने की दृष्टि से मैं परम पूज्य आचार्य श्रीराम शर्मा के द्वारा गायत्री महाविज्ञान भाग-दो के पृष्ठ 37 पर व्यक्त विचार पाठकों के चिंतन-मनन हेतु यथावत प्रस्तुत करता हूं:- ''आत्मा ईश्वर का अंश होने से उन सब शक्तियों को बीज रुप में छिपाये रहती है जो ईश्वर में होती हैं। वे शक्तियां सुप्तावस्था में रहती हैं और मानसिक तापों के, विषय-विकारों के दोष-दुर्गुणों के ढेर में दबी हुई अज्ञान रुप से पड़ी रहती हैं। लोग समझते हैं कि हम दीन-हीन तुच्छ और अशक्त हैं पर जो ''साधक'' मनोविकारों का पर्दा हटाकर निर्मल आत्म ज्योति के दर्शन करने में समर्थ होते हैं, वे जानते हैं कि सर्वशक्तिमान की ईश्वरीय सत्ता उनकी आत्मा में मौजूद है और वे परमात्मा के

सच्चे उत्तराधिकारी हैं। अग्नि के ऊपर से राख हटा दी जाए तो फिर दहकता हुआ अंगारा प्रकट हो जाता है। वह अंगारा छोटा होते हुए भी भयंकर अग्निकाण्डों की संभावना से युक्त होता है। यह परदा हटते ही तुच्छ मनुष्य महान आत्मा (महात्मा) बन जाता है। चूंकि आत्मा में अनेकों ज्ञान, विज्ञान, साधारण, असाधारण, अद्‌भुत, आश्चर्यजनक शक्ति के भंडार छिपे पड़े हैं, वे खुल जाते हैं और वह सिद्ध योगी के रुप में दिखाई पड़ता है। सिद्धियां प्राप्त करने के लिए बाहर से कुछ नहीं लाना पड़ता, किसी देव, दानव की कृपा की जरुरत नहीं पड़ती है, केवल अन्त:करण पर पड़े आवरण को हटाना पड़ता है।'' इसी प्रक्रिया को पुरुष से पुरुषोत्तम की यात्रा कहा जाता है। इस यात्रा के पथिक को क्या मार्ग अपनाना होगा है, स्वाभाविक रुप से आध्यात्मिक मार्ग ही एकमात्र मार्ग है जिसे हम भक्ति मार्ग भी कह सकते हैं। श्रीरामचरित मानस में गोस्वामी जी ने जिस मार्ग का निरुपण किया है उस ओर मैं आपको आकर्षित करना चाहूंगा।

श्रीरामचरित मानस के प्रसंग श्रीराम की भगवत्ता एवं उनकी भक्ति के संबंध में कागभुसुंडि गरुड़जी को ज्ञान और भक्ति का भेद, जीव और माया एवं मायाबद्ध जीन की गति तथा माया से मुक्ति के उपाय आदि बताते हैं। वे कहते हैं 'हे तात यह अकथनीय कहानी है, यह केवल समझते ही बनती है, कही नहीं जा सकती।'' -समुझत बनई न जाई बखानी- जीव ईश्वर का अंश है अतएव वह अविनासी, चेतन, निर्मल और स्वभाव से ही सुख की राशि है। (चेतन, अमल सहज सुख राशि)। यह जीव माया के वशीभूत होकर तोते और बंदर की तरह अपने आप ही बंध गया है। जैसे मदारी तोते और बंदर को पसंद की चीजें देकर अपने बस में कर लेता है और अपनी मर्जी के काम कराता है। यही स्थिति संसार में बुरी तरह लिप्त जीव की होती है, उसका मन भी काम, क्रोध, लोभ, मोह में फंसा होने के कारण उससे मनमर्जी का कार्य कराता है। इसे ही आध्यात्म में भव-बंधन या भवरोग कहा जाता है। इसी प्रपंच को गोस्वामीजी ने ''जब ते जीव भयेउ संसारी'' कहा है। जीव के संसारी होते ही ईश्वर और जीव के बीच जड़ और चेतन की ग्रंथि पड़ गयी। इस गांठ के पड़ने से व्यक्तिगत चेतना का सर्वोच्च चेतना से संपर्क टूट गया अथवा ज्ञान पर अज्ञान का परदा पड़ गया है। इस अज्ञान के कारण जीव भव-बाधाओं को भोगता रहता है। यह परदा हटेगा तभी जीव सुखी होगा। अग्नि से राख हटने पर ही अग्नि का वास्तविक स्वरुप प्रकट होता है। इस अज्ञान के परदे को हटाने के लिए गोस्वामीजी ने एक सुन्दर अलंकारिक प्रक्रिया का उल्लेख मानस में किया है--सात्विक श्रद्धा धेनु सुहाई। जौ हरि कृपा हृदय बस आई।।

जप तप व्रत जम नियम अपारा। जे श्रुति कह सुभ धर्म आधारा।।

तेई तृन हरित चरै जब गाई। भाव बच्छ सिस पाई पेन्हाई।।

नोई निवृत्ति पात्र विश्वासा। निर्मल मन अहीर निज दासा।।

परम धर्ममय मय दुई भाई। अबटे अनल अकाम बनाई।।

तोष मरुत तब छमा जुड़ावै। धृति सम जावनु देई नभावै।।

मुदिता मथै विचार मथानी। दम अधार रजु सत्य सुबानी।।

तब मथि काढ़ि लेई नवनीता। विमल बिराग सुभग सुपुनीता।।

दोहा- जोग अगिनि करि प्रकट तब कर्म सुभासुभ लाई।

बुद्धि सिरावै ग्यान घृत ममता मल जरि जाई।।

तब विज्ञान रुचिनी बुद्धि बिसद घृत पाई।

चित्र दिया भरि धरै दृढ़, समता दिअटि बनाई।।

तीन अवस्था तीन गुन तेहिं कयास तें काढ़ि।

तूल तुरीय सँवारि पुनि वाती करै सुगाढ़ि।।

विषय मूल रुप से गीता के पन्द्रहवें अध्याय पुरुषोतम योग से उठाया गया है इसीलिए इसका शीर्षक 'पुरुषोत्तम की यात्रा' कहा है। पुरुष से पुरुषोत्तम की यात्रा विशुद्ध रुप से आध्यात्मिक है। विषय-भक्ति से संबंधित है। इस मार्ग की व्यवस्थाओं के संबंध में पहले हमने गीता के मार्ग से विचार किया था। प्रस्तुत चर्चा श्रीरामचरित मानस के मार्ग से की जा रही है। इसी भक्ति मार्ग का निरुपण पूज्यपाद गोस्वामीजी ने उपर्युक्त चौपाइयों एवं दोहों में किया है। यह कहा गया है कि ईश्वर की कृपा से यदि किसी भक्त के हृदय में सात्विक श्रद्धा रुपी गाय बस जाय तो इसे निरन्तर बनाये रखने के लिए भक्त को या व्यक्ति को गाय को हरा चारा चरने के लिए देना होगा। जितना हरा चारा गाय खायेगी उतनी ही मात्रा में दूध देगी। यह हरित तृन जिस प्रकार गाय के लिए उपयोगी है उसी प्रकार हृदय में भक्ति भाव को निरंतर एवं दृढ़ बनाने के लिए जप, तप, व्रत जम और नियमों का निरंतर अभ्यास करना होगा, क्योंकि शास्त्रों में इन्हें ही धर्म का आचरण कहा गया है। भक्ति के लिए, धर्म आचरण के लिए 'श्रृद्धा' भी उतनी ही आवश्यक है, श्रृद्धा को श्रीमद्‌भगवतगीता में तीन प्रकार का बताया गया है। इन तीनों प्रकार की श्रृद्धा से युक्त मनुष्यों के रहन-सहन, खान-पान, पूजा पद्धति आदि के संबंध में विस्तार से उल्लेख है।

- सेवानिवृत्त अवर सचिव, म.प्र.शासन,एलआईजी
210 ए कोटरा, भोपाल

--------■ ■--------

जैसी मति-वैसी गति-भगवद्गीता की दृष्टि में

कल्याण सिंह रघुवंशी

यह शाश्वत सत्य है, ऋषि मुनियों ने तो कहा ही है , भगवान श्रीकृष्ण ने भी भगवद्गीता में अर्जुन को उपदेश देते समय कहा था कि मनुष्य के अन्तिम क्षण में जो विचार रहेगा उसी के अनुसार उसका भविष्य बनेगा। अन्तिम विचार के अनुसार ही उसको आगामी जन्म मिलेगा। इसे हम इस प्रकार भी व्याख्यायित कर सकते हैं ''जैसी मति-वैसी गति।'' भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं-

यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम।

तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भाव भावितः।।

-मनुष्य अंतकाल में जो भाव रखते हुए शरीर त्याग करता है, हे कौन्तेय! वह उसी भाव को प्राप्त करता है क्योंकि वह सदा उसी भाव से भावित रहा है।

दृष्टान्त- अजामिल ने अपना सच्चारित्र्य छोड़कर गर्हणीय जीवन यापन करना आरम्भ किया, वह पापमय प्रवृत्तियों में गहरा रंग गया और चोरी डकैती भी करने लगा। एक वैश्या का गुलाम बन गया। दस बच्चों का पिता बना। उसके अंतिम लड़के का नाम 'नारायण' रखा गया। जब मृत्युकाल आया तो वह अपने अंतिम लड़के को स्मरण कर आवाज देने लगा। तब ही अजामिल के सम्मुख यम दूत आ खड़े हुए। उसके मुंह से 'नारायण' नाम के उच्चारण से हरिदूत भी दौड़े आये और यम दूतों को हटाकर अजामिल को बैकुंठ ले गये। श्रीकृष्ण गीता में कहते हैं-

अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः।

तस्याहं सुलभः पार्थ नित्य युक्तस्य योगिनः।।

जो व्यक्ति अनन्य चित्त होकर सर्वदा मेरा स्मरण करता है उस नित्य युक्त योगी के लिए हे पार्थ! मैं सुलभ हूं।

मामुपेत्य पुनर्जन्म दुखालयम शाश्वतम।

माप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमांगतः।।

इस प्रकार मुझे प्राप्त करने पर वह दुखमय अनित्य संसार में पुनर्जन्म को प्राप्त नहीं होता, वह महात्मा परम सिद्धि पा चुका है।

आब्रह्म भुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोर्जुन ।

मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते ।।

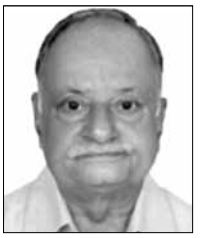

हे अर्जुन! ब्रह्मलोक पर्यन्त सभी लोक अनित्य हैं, उनमें जाकर पुनः लौटना होता है, परंतु मुझे प्राप्त होने के बाद पुनर्जन्म नहीं होता।

इसीलिए सदा सर्वदा मेरा ही स्मरण करो और प्रयत्न करते रहो। इस प्रकार मन और बुद्धि मुझ में लीन किये रहने से निश्चित ही मुझको प्राप्त होओगे।

सामान्य गृहस्थ पुरुष भी सांसारिक कृत्य करते हुए सदा हरि-स्मरण बनाये रखता है तो वह उसे अन्त समय में ईश्वर स्मरण करने की सहज प्रेरणा देगा। भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं-

अभ्यास योगयुक्तेन चेतसा नान्य गामिना ।

परमं पुरुषं दिव्यं याति पार्थानुचिन्तयन ।।

जो व्यक्ति अभ्यास करते करते अचंचल मन से परम पुरुष का अनुचिन्तन करता है, हे पार्थ! वह उस दिव्य परम पुरुष को ही प्राप्त होता है। भगवान श्रीकृष्ण आगे कहते हैं-

अन्तकाले च मामेव स्मरन युक्त्वा कलेवरम् ।

यः प्रयाति स मद्भावं यानि नास्त्यत्रसंशयः ।।

जो व्यक्ति अन्तकाल में में मेरी परम सत्ता का ही विचार करते हुए, श्रीकृष्ण या नारायण के रुप में मेरा ध्यान करते हुए शरीर का त्याग करते हैं, वे मुझे प्राप्त होते हैं, मेरे भाव को पा लेते हैं। इसमें शंका नहीं। गीता में अन्यत्र कहा है:-

एषा ब्राम्ही स्थितिः पार्थ मैनां प्राप्य विमुह्यति ।

स्थित्वास्मामन्त कालेअपि ब्रम्ह निर्वाण मृच्छति ।।

जो अन्त समय में भी अपना मन मुझ में स्थिर कर देता है, सर्वसन्यास की उस ब्राम्ही-स्थिति प्राप्त करने पर फिर भी मोहित नहीं होता।

जो व्यक्ति अपने जीवन-काल में सुंधनी का सेवन करने का आदी होता है, उसकी मृत्यु से पहले अचेतनावस्था में भी उसकी अंगुलियां सुंधनी सूंघने जैसी हलचल करती हैं। इसका अर्थ यह है कि उसमें सुंधनी के सेवन की बहुत पक्की आदत पड़ी हुई है।

कामुक व्यक्ति के मन में अंतिम क्षण में अपनी प्रिया का ही विचार आयेगा। पुराने शराबी का अंतिम विचार शराब का एक

घूंट पीने का होगा। लोभी साहूकार का अंतिम विचार धन से संबंधित होगा। पुत्र के प्रति माता का अंतिम विचार पुत्र संबंधी होगा और योद्धा का अंतिम विचार शत्रु पर गोली चलाना ही होगा।

राजा भरत का दृष्टान्त भी उपलब्ध है, उन्होंने दया करके एक हिरन का बच्चा पाल लिया था, उसके प्रति उनके मन में आसक्ति हो गई, मृत्यु के समय उसी का ध्यान रहा इसलिए उन्हें अगला जन्म हिरण की योनी में लेना पड़ा।

निरन्तर अभ्यास के द्वारा जीवन में जिसने हरि-स्मरण की आदत डाली होगी, मन को हरिमय बनाया होगा, उसी का अंतिम विचार हरिमय हो सकेगा। यह एक दो दिन या कुछ महीनों की बात नहीं है, यह तो जीवन भर के सुदीर्घ अभ्यास तथा प्रयास का फल है।

अंतिम विचार जैसा होगा वैसा ही अगला जन्म होगा। जीवन भर जो विचार प्रमुखत: से रहा होगा वहीं विचार अंतिम समय में आयेगा।

भगवान श्रीकृष्ण के गीता के उपदेशों का सार यही है, अंतिम विचार के अनुरुप ही अगला जन्म मिलेगा। मनुष्य जो सोचता है, वहीं बनता है, अर्थात् जैसी मति-वैसी गति।

-बी-9, रॉयल रेसीडेंसी, भोपाल
मोबा. 9406533839

--------■ ■--------

यज्ञ सम्राट पूज्य संतश्री का चतुरमास है दर्शनीय

ओमवीर सिंह रघुवंशी

सनातन धर्मावलम्बी और विशेषकर मध्यप्रदेश का रघुवंशी समाज वर्ष 2007 में छिंदवाड़ा में हुए 1008 कुंडीय सीताराम महायज्ञ को एवं अप्रैल 2017 में गमाकर बासौदा में सम्पन्न हुए 1111 कुंडीय अतिरुद्र महायज्ञ के विराट आयोजन को भूले नहीं होंगे और उसकी स्मृतियां रघुकलश के पाठकों सहित हर सामाजिक बंधु को याद होगी।

इन विराट यज्ञों के माध्यम से रघुवंश की कीर्ति पताका को श्री हनुमानजी की कृपा से थामे हुए संत ''यज्ञ सम्राट'' महामंडलेश्वर श्री श्री 108 श्री महेंद्र कनकबिहारी दास जी महाराज वर्तमान में अशोकनगर गुना-शिवपुरी जिलों के मध्य ग्राम डुंगासरा के पठार :खुले मैदान: में चतुरमास करते हुए भक्ति मार्ग पर निरन्तर प्रवचन प्रदत्त कर रहे हैं। मूसलाधार बरसात, ठंडी व तेज हवाओं को खुले मैदान में सहते हुए लंगोटीधारी ये परमत्यागी सन्त भजन साधना में अडिग हैं। सन्तश्री की साधना स्थली पर गत 3 माह से अखंड सीताराम संकीर्तन चल रहा है। प्रतिदिन विभिन्न ग्रामों के धर्मालम्बी जन स्वेच्छा से मंडली के रुप में आते हैं और चौबीस घंटे संगीतमय सीताराम नाम संकीर्तन करते हैं।

अस्थायी निर्माण के नीचे भजन कीर्तन मंडली एवं दर्शनार्थियों के भोजन की व्यवस्था क्षेत्रवासियों द्वारा की जा रही है। सन्तजी रात-दिन खुले आसमान के नीचे मैदान में ही अपना आसान लगाये हुए हैं। उल्लेखनीय है कि यज्ञ सम्राट संत पूज्यनीय श्री 108 कनकबिहारी महाराज दास जी के विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि आगामी वर्ष अप्रैल-मई माह मे भी चतुरमास ग्राम डुगासरा, जिला अशोकनगर की पठार पर होगा। इसमें महाराज जी 1212 कुंडीय विराट महायज्ञ करेंगे। ज्ञात हो कि महाराजजी द्वारा कराये जाने वाले इन यज्ञों की यज्ञ वेदियों पर मात्र रघुवंशियों को ही यजमान बनने का सौभाग्य प्राप्त होता है, जबकि दर्शन, दान-पुण्य आदि सभी सनातन धर्मावलंबी करते हैं।

यज्ञ का आयोजन विश्व कल्याण व राष्ट्र की सुख-सम्पत्ति, शांति

व प्रगति के लिए किया जाता है। यज्ञ के आचार्य व अन्य सभी संलग्न ब्राह्मणजन वैदिक रीति से यज्ञ सम्पन्न कराते हैं। गमाकर बासौदा के 1111 कुंडीय यज्ञ में प्रतिदिन लाखों धर्मावलम्बी यज्ञशाला की परिक्रमा कर कथा श्रवण और महाराज जी के दर्शन व भोजन भंडारा करते थे। उस परमानंद की अनुभूति का स्मरण कर धर्मावलंवी-जन उत्साहित हैं कि एक बार पुन: वैसा ही धर्मलाभ एवं परम आनंद 2019 में ग्राम डुंगासरा की पठार पर भी मिल सकेगा। वर्तमान में चल रहे चतुरमास स्थल पर 19 अगस्त को श्रीरामचरित मानस व गौ संरक्षण संगोष्ठी का भव्य आयोजन महाराजजी के सामने सम्पन्न हुआ।

-संपर्क- रघुकलश ब्यूरो प्रमुख, ग्वालियर-चंबल संभाग,मोबा.9425701313

विवाह योग्य युवक-युवती

Name-**Shobha Raghuvanshi**, DOB- 11-04-1984 (Place of Birth- Dhar), Time- 9:15 am, Height- 5ft 2 inches, Qualification- Graduation: B.A.LL.B. & Post Graduation - LLM from National Law Institute University (NLIU), Bhopal, Director at Vansham Classes, Geeta Bhawan Square (Indore) , Family Details- Father – Pratap Singh Raghuvanshi, Advocate, Brothers – Sunil Raghuvanshi, Advocate & Dharmendra Raghuvanshi, Advocate. Father's Gotra- Maina, Mama Gotra- Barod, Residence Adress – 136, Trimurti Nagar, Dhar (Madhya Pradesh). Contact number – 9993071325, 9098713701, 9131257925. Mail - sunilraghuvanshiadv@gmail.com

NAME : **RANI RAGHUWANSHI**, FATHER'S NAME: SH. ASHOK SINGH RAGHUWANSHI, DATE OF BIRTH: 26-12-1989(1:20AM), PLACE OF BIRTH - LUKWASA(SHIVPURI), QUALIFICATIONS- BE(COMPUTER SCIENCE), MBA IN FINANCE(APPEARING,DISTANCE LEARNING), JOB PROFILE: OFFICER IN BANK OF INDIA, POSTED AT KOLARAS BRANCH, HIEGHT: 5.1", WIEGHT 48, COMPLEXION FAIR, GOTARA RIJODIYA, MAMA'S GOTARA: PACHALAIYA, BROTHER'S - 1. RANU RAGHUWANSHI(CA) WORKING IN SFURNA GLOBLE LTD NIGERIA(SA)., 2. RAVI RAGHUWANSHI (BE) COMPETITIVE EXAM PREP., 3. SHAILENDRA RAGHUWANSHI (BA RUNNING), FATHER'S BROTHER - 1. SH. GOVIND SINGH RAGHUWANSHI (RETIRED DISTT. EXCISE OFFICER), 2. SH. RAJARAM SINGH RAGHUWANSHI (RETIRED ADMIN. OFFICER MED. EDUCATION DETT.)-Contact: 9993958897, 8962543704

विवाह योग्य युवक-युवती

Name : Gaurav Raghuwanshi, DOB : 20th Oct. 1987, Place of birth : Amravati, Maharashtra, Birth time : 2.40AM, Height : 5'7", Gotra : Pachaliya, Education : B.E. Electronic from Mumbai University, Presently working as I.T. professional in Exceptionair Technologies, Pune., Father name : Ratansingh Raghuwanshi, Retired APO, DRDA, Thane, Mother Name : Savita Raghuwanshi, Head Mistress, Z.P School, Brother : Kunalsingh Raghuwanshi, Vice President BARCLAY, London, Sister in Law : Preety Raghuwanshi, IT professional , London, Address : 404, A1 Shrey palace, Rambag No. 4, Kalyan, Contact No : 08169957874 / 9421631434

Name : Mayuri Pardeshi, Age :27, Height : 5', Date of Birth : 09th sept 1991, Place of Birth : Nandurbar(Maharashta), Educational Qualification: MBA (Finance), Professional Information- Working Company Name : WNS Global Services, Pune, Family Details- Father's Name: Dilipsing Pardeshi, Mother's Name:Nirmala Pardeshi, Horoscope Details - Sun Sign : Leo, Gotra: Barod, Contact Details, Permanent Address : Pardeshipura Near D R High School, Nandurbar, (Maharashta), Mobile No : 08329277304, 08550929581(Sister), E-mail Id : mayuripardeshi999@yahoo.in

Name : Neha Rajesh Verma, DOB-March 1993, Height- 5 ft 3 inches,Qualifications- Graduations- BE in electronics and communications, Post graduated- Mtech in Digital Communications, Job- Business Developer and Android Developer in an IT Firm(Carina Technologies Indore), Father- Mr. Rajesh Pratapsingh Verma, Occupation- owns a business in Burhanpur, Mother- Smt. Vaishali Verma (Home maker), Father Gotra- Matheneria, Mother Gotra- Kaan, Younger Sister- Megha Verma (Pursuing Physiotherapy), uncle- Dr. Satish Verma,uncle- Mr. Umesh Verma(C.A), Contact no.- 907701119, 7000674829

नाम- रुचि रघुवंशी, पिता- श्री महेन्द्रसिंह रघुवंशी, शिक्षा- एम.कॉम, डीईडी, एमबीए, कद- 5 फिट 6 इंच, रंग-गोरा एवं साफ, गोत्र-बमोर्या, मामा का गोत्र-झरा, पिता का व्यवसाय-शासकीय शिक्षक, माता-श्रीमती अर्चना रघुवंशी गृहणी, पता-बनर्जी कालोनी, पचमढ़ी रोड, पिपरिया, जिला होशंगाबाद, मोबाइल-6260023060, 9165680866.

स्वच्छ भारत बनाएं

तन हो स्वच्छ
मन हो स्वच्छ
यह तो है
प्रकृति का नियम
लेकिन कोई करें तन ही स्वच्छ
ना करें मन स्वच्छ
तन और मन से
ही तो है जीवन
बगैर मन-तन निष्प्राण
बगैर तन-मन निष्प्राण
फिर भी कोई ना करें
जतन, जतन स्वच्छ
तन हो स्वच्छ
मन हो स्वच्छ
यह तो है
प्रकृति का नियम
पर्यावरण ने किया नियमों का पालन
सारे जग को दिया एक आवरण
सदियों से होता रहा पालन
हे मनुष्य! तुमने किया
प्रकृति को लाचार
पर्यावरण के नियमों को तोड़ा
जीवन जीने के तरीके तोड़े
इस तोड़-फोड़ के फंदों ने
पर्यावरण - प्रकृति - तन-मन को उलझाया
जगह-जगह ढेर कचरे के
जगह-जगह प्लास्टिक उड़े
जगह-जगह अस्वच्छता का अंबार
उजड़े खेत-खलिहान
बिमारियों ने है घेरा
मानव, जानवर सभी को
करना है रक्षा इस
जगत की तो
स्वच्छता से मुँह ना मोड़ो.....

ये मेरा नहीं कचरा.....
ये तेरा नहीं कचरा.....
यह सबका है कचरा.....
यह सोच करो स्वच्छता अभियान.....
ना करो सिर्फ चित्र-फोटो
पत्र-पत्रिकाओं में छापने हेतु
यह सोच करो स्वच्छता सबका
कर्म है, धर्म है.....
तभी पूरा भारत होगा
स्वच्छ और खुशहाल.....

श्रीमती सुषमा रघुवंशी
प्राचार्य, कमला नेहरू हा.से. स्कूल (सी.बी.एस.ई.)
कमला नगर, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल

तुम न आए

तुम कितने दिन में घर आये?
देख न पाते दृग भर आये?
यह सच है या मेरा भ्रम है?
दृग कठोर पर हृदय नरम है।
नव बसंत के झोकों जैसी
चंचलता का क्या कर आए?
तुम आए ही यह क्या कम है
साँझ रहे, पर क्यों शबनम है
मैं आभारी हूं और रहूंगा
अपने से कुछ नहीं कहूंगा
चौंक पड़ा मैं ज्यों सपने से
उस बेसुध क्षण के मिटने से।
पलक ढकें या पवन बुहारें
दो दीपक नित नव उजियारे।

डॉ. देवकीनंदन जोशी
संपर्क-मो. 8720031001

धूम-धाम से मना हजारीलाल जी का जन्मदिन

अखिल भारतीय रघुवंशी (क्षत्रीय) महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं मध्यप्रदेश सरकार के पूर्व मंत्री और पूर्व विधानसभा उपाध्यक्ष श्री हजारीलाल रघुवंशी का जन्मदिन 5 जुलाई 2018 को होशंगाबाद जिले के सिवनी-मालवा (बानापुरा) में धूम-धाम से मनाया गया। इस अवसर पर उनके परिवारजनों, शुभचिंतकों ने जन्मदिन की बधाई देते हुए उनकी दीर्घायु होने की कामना की।

ऐसी आरती राम रघुवीर की करहिं मन

डॉ. प्रेम भारती

संस्कृत, हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में आरतियों की रचना शताब्दियों से संत-महात्मा-कवि-कीर्तनकार तथा रचनाकार करते आ रहे हैं और करते रहेंगे। भक्तिकाल में महाकवि सूरदास ने विराट भगवान द्वारा रचित सृष्टि का रुप आरती में दिखलाया है, जो अपने आप में अनूठा है। सूरदास के अतिरिक्त अष्ट-छाप के कवियों ने भी राधा-कृष्ण विषयक आरतियों की रचना की है।

रामभक्ति शाखा के प्रवर्तक गोस्वामी तुलसीदासजी ने एक आरती में तो अनुप्रास की झड़ी लगा दी है। प्राय: प्रत्येक मंदिर में यह आरती प्रात: एवं सायं सुनने को मिलती है। दृष्टव्य है-

श्री रामचन्द्र कृपालु भजुमन, हरण भवभय दारुणम।
नव कंज-लोचन, कंजमुख, कर-कंज, पदकंजारुणम।।

श्रीराम की आरती के अतिरिक्त उन्होंने माता सीता, हनुमान, गंगा मैया तथा रामायण की आरती-तातमात सब बिधि तुलसी की कहकर की है। पाठकों को यहां स्मरण दिलाना आवश्यक है कि इन सभी प्रकार की आरतियों का गायन नवधा-भक्ति की कीर्तन विधि का ही एक रुप है।

किन्तु तुलसीकृत 'विनय पत्रिका' में पद संख्या 47 तथा 48 में आरती के संबंध में जो विषय-वस्तु पढ़ने को मिलती है उस ओर पाठकों का ध्यान बहुत कम जाता है। इसका प्रमुख कारण यह है कि हम जिस आरती से परिचित हैं, उसमें धूप, दीप, नैवेद्य, पुष्प तथा अक्षत की प्रधानता रहती है किन्तु इन दोनों पदों में तुलसी ने जिस आरती का विधान किया है उसमें 'हरति सब आरती, आरती राम की।' कहकर आरती शब्द का आशय दो दृष्टियों से स्पष्ट किया है। प्रथम आरती शब्द का अर्थ-आर्ति अर्थात् जो पीड़ा को हरती है, दूसरा अर्थ है आरती जो पूजा-विधान के अंतर्गत आता है। इस पर विचार किया जाए तो यह निश्चयपूर्वक कह सकते हैं कि विनय-पत्रिका में तुलसी ने जिस आरती का उल्लेख किया है, वह केवल बत्ती जलाकर समस्त उपलब्धियां प्राप्त करना नहीं अपितु कामादि विकारों से छूटने की भावना को बलवती बनाना है इस विषय पर कुछ कहने से पूर्व हमें इन दोनों पदों की विषय वस्तु को पहले ध्यान में लाना होगा-

ऐसी आरती राम रघुबीर की करहिं मन।
हरन दुखदुंद गोविन्द आनन्दघन ।।
अचरचर रुप हरि, सरबगत,
सरबदा बसत, इति वासना धूप दीजै।
दीपनिज बोधगत-कोहि-मद
मोह-तम, प्रौढ़ अभिमान चित वृत्ति छीजै ।।

भाव अतिशय विशद प्रवर नैवेद्य शुभ श्री रमण परम संतोषकारी।

प्रेम-तांबूल गत शूल संशय सकल,
विपुल भव-वासना बीज हारी ।।
अशुभ शुभ कर्म-घृत पूर्ण दश वर्तिका,
त्याग पावक, सतोगुण प्रकासं।
भक्ति-वैराग्य-विज्ञान दीपावली,
अर्पि नीरांजन जग निवासं ।।
विमल हृदि-भवन कृत शांतिपर्यक शुभ,
शयन विश्राम श्री राम राया।
क्षमा करुणाप्रमुख तत्र परिचारिका,
यत्र हरि तत्र नहिं भेद माया ।।
एहि आरती निरत सनकादि, श्रुति,
शेष, शिव देवरिषि,
अखिल मुनि तत्व-दरसी।
करै सोई तरै, परिहरै कामादि मल,
वदति इति अमल मति-दास तुलसी ।।

अर्थात पूजा-आरती जिन प्रतीकों से की जाती है वे तो प्रतीक मात्र हैं सत्परिणाम देने वाली आरती तो सद्गुणों के उपचारों से की जाती है। इसी भाव को प्रदर्शित करते हुए इस पद में तुलसी कहते हैं-

जड़-चेतन मय यह जगत ईश्वर रुप है। वह ईश्वर सर्वव्यापी और नित्य है। उन्हें वासना की धूप, आत्मज्ञान का स्वयं प्रकाशमान दीप, श्रेष्ठ भाव का नैवेद्य, प्रेम का ताम्बूल, दसों इन्द्रियों की बत्ती, त्याग की अग्नि से जलाकर भक्ति, वैराग्य विज्ञान रुप आरती कर। भगवान को हृदय रुपी मंदिर में शांति के

पलंग पर शयन करवाकर क्षमा, करुणा आदि मुख्य दासियों को सेवा के लिए नियुक्त कर। जिसके हृदय में हरि का निवास रहता है, वहां भेद रुपी दुर्गुण नहीं रहते। कामादि विकारों से छूटने तथा भव सागर को तर जाने के लिए तुलसी कहते हैं, ऐसी आरती फलदायी होती है।'' आरती की फल-श्रुति बताते हुए वे कहते हैं-

हरति सब आरती आरती राम की।
दहन दुख-दोष निरमूलिनी काम की।।
सुरम सौरभ धूप दीप वर मालिका।
उडत अघ विहंग सुनि ताल करतालिका।।
भक्त-हृदय भवन, अज्ञान तम हारिनी।
विमल विग्यान मय, तेज-विस्तारिनी।।
मोह-मद-कोह-कलि-कंज हिम जामिनी।
मुक्ति की दूतिका, देह-दुति दामिनी।।
प्रनत-जन-कुमुद बन-इंदु करजालिका।
तुलसी अभिमान महिषेश बहुकालिका।।

अर्थात् आरती का मर्म न जानकर यदि हम उसके माध्यम से केवल सांसारिक उपलब्धियां चाहें, तो यह हमारा अविवेक ही कहा जाएगा। आरती की फलश्रुति को तुलसी ने इस पद में इस प्रकार गिनाया है-

1-यह आरती सम्पूर्ण पीड़ाओं का हरण कर लेती है।

2-दुख और पापों को जला देती है।

3-कामनाओं को जड़ से उखाड़ कर फेंक देती है।

4-आरती के समय ताली बजाने से पाप रुपी पक्षी तुरन्त उड़ जाते हैं।

5-यह आरती भक्तों के हृदय-रुपी भवन से अंधकार का नाश कर देती है और निर्मल विज्ञानमय प्रकाश को फैला देती है।

6-यह मोह, मद, क्रोध और कलियुग रुपी कमलों के नाश के लिए जाड़े की रात है।

7-मुक्ति रुपी नायिका से मिलाने वाली दूती है।

8-इस आरती की चमक बिजली के समान है।

9-शरणागत भक्तरुपी कुमुदिनी ने वन को प्रफुल्लित करने के लिए चंड-किरणों के समान है।

10-अभिमान रुपी महिषासुर का मर्दन करने के लिए कालिका के समान है।

उपर्युक्त दोनों पदों से स्पष्ट होता है कि संत तुलसी ने अपने पाठकों को आरती की लौ को घुमाते रहने की प्रक्रिया के पीछे छिपे रहस्य को एक स्वस्थ आध्यात्मिक प्रतीकों के माध्यम से समझाने का प्रयत्न किया है। इस प्रकार की गई आरती का प्रभाव जीवन पर पड़ता है किन्तु देखने में यह आ रहा है कि आराधक को वही आरती गाना अधिक पसंद होता है जिससे उसकी मनोकामनाएं पूरी हों। शायद इसीलिए मंदिरों में वही आरती गाई जाती है जिसे गाकर उसका घर सुख-संपत्ति से भरा रहे। बंध्या को पुत्र मित्रे, निर्धन को माया मिले, विद्यार्थी को विद्या मिले आदि-आदि। अर्थात् मनुष्य की जितनी भी कामनाएं हैं-लोकेषणा, वित्तेषणाय पुत्रेषणा उसके आरती गाने से पूरी हों। अत: हमें तुलसी के इन पदों का अध्ययन कर यह स्पष्ट समझ लेना होगा कि आरती गाकर सांसारिक विषयों और सुखों की कामना करना भक्ति की विपरीत दिशाएं हैं। तुलसी ने इन दोनों पदों में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि यदि मन में काम, क्रोध, लोभ, मोह है और उनके द्वारा सांसारिक पदार्थों में आसक्ति बनी रहे तो परब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति किसी भी प्रकार नहीं हो सकती। परमात्मा से यदि मांगना ही है तो वह वस्तु मांगें जिसे कोई और देने में समर्थ न हो। सकाम भक्ति का यह अंतिम सत्य है।

यदि सकाम-कर्म करने से मनोरथ सिद्ध होते हैं तो सकाम भक्ति से परमात्मा भी मिलते हैं। मीरा सकाम-भक्ति में सर्वश्रेष्ठ भक्त के रुप में प्रतिष्ठित हुई हैं। उन्होंने भी कहा है-दधि मथ घृत काढि लियो छांडि दयो छइ अर्थात इस संसार रुपी दही को मथकर मैंने जो नवनीत निकाला है, उसी से गिरधर गोपाल का विग्रह बनाकर मैंने हृदय में धारण कर लिया है। यही है सच्चा भक्ति-योगी जो भक्ति के माध्यम से हृदय को शुद्ध कर परमात्मा से मिलता है। भक्ति-सिक्त साधकों ने इसीलिए परमात्मा से परमधाम की याचना नहीं की। उन्हें भक्ति-रस में जो कुछ मिला वह परम धाम से भी परम था।

कुछ लोग आर्त :दुखी: व्यक्ति की पुकार को आरती कहते हैं। आर्त शब्द में ऋ धातु है। ऋच्छति अर्थात् निराश हो जाना। अत: जो आर्त :दुखी: हैं, वे ही आरती करते हैं। किन्तु ऐसा कहते समय वे यह भूल जाते हैं कि आरती शब्द 'आर्ति' न होकर आरती है। आरती शब्द आरति: हिन्दी रुपांतर है। जो 'आ' उपसर्ग पूर्वक रम् धातु में क्तिन् प्रत्यय लगाने से उत्पन्न होता है। इससे इष्ट के साथ रमण स्थिति में समस्त जगत के बिखरे सौंदर्य को समेटकर इष्ट की छबि को हृदय में उकेरना चाहता है। भक्त की इसी भावना से वह कण-कण में व्याप्त

परमात्मा के निकट पहुंच जाता है। इस दृष्टि से हम जब तक आरती गाकर सर्वव्यापी और नित्य परमात्मा का चिंतन नहीं करेंगे तब तक प्रत्येक जीव में बसे परमात्मा की अनुभूति हम नहीं कर सकेंगे। तुलसी ने आरती में इसी भाव-यात्रा का विधान किया है। श्रीमद्भागवत में कपिल भगवान ने इसी तथ्य को समझाते हुए अपनी जिज्ञासु मॉ देवहूति से कहा है-

अहं सर्वेषु भूतेषु भूतात्मभाव स्थित: सदा।

तमवज्ञाय मां मर्त्य: कुरतेअर्चा विडम्बनम्।।

अर्थात् ये माता! मैं तो आत्मरुप से सभी प्राणियों में अवस्थित हूं। इस बात की अवहेलना करके जो लोग मंदिरों में पूजा अर्चना करते हैं किन्तु प्राणी-मात्र में परमेश्वर को नहीं देखते, उनकी पूजा-अर्चना विडम्बना :ढोंग: है। इससे स्पष्ट है कि पूजा-अर्चना की फलश्रुति है-परमात्मा को आत्मसात करना। तुलसी ने विनय-पत्रिका में इन दो पदों में यही संकेत दिया है। अत: आरती में पूर्ण समर्पण भाव चाहिए। समर्पण भाव से जो तादात्म्य स्थापित होता है उसमें परमात्मा, आरोग्य, समृद्धि, संतति और सुख देगा, यह भाव कैसे आयेगा? यह भाव तो उसमें स्वत: निहित हैं। भक्ति और कामना मैं यही मुख्य अन्तर है। भक्ति में इष्ट से रमण-भाव मुख्य रहता है जबकि कामना में अपने लिए सब कुछ पाने की इच्छा रहती है। आरती में फलासक्ति सांसारिक कामनाओं, विषय-सुखों से मुक्ति नहीं दिलाती। वह मनोरथ पूर्ण होने की कामना जगाती है। यही कारण है कि सामान्य रुप से लोग संत तुलसी के इस पद को समझने की चेष्टा ही नहीं करते।

विनय पत्रिका के पद संख्या 59 में उन्होंने अपने इष्ट का आध्यात्मिक समस्याओं के समाधान का एक स्वरुप निरुपित किया है और राम-रावण युद्ध को मनुष्य के अन्त:करण को सत्-असत् प्रवृत्तियों का संघर्ष सिद्ध किया है। इस पद का भावार्थ इस प्रकार है-

''इस शरीर रुपी ब्रह्माण्ड में प्रवृत्ति ही लंका का किला है। मन रुपी मय दानव ने इसे बनाया है। इसमें जो पांच कोश- अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनन्दमय- हैं वे इसके पांच महल हैं। तीनों गुण -सत्, रज, तम- इसके सेनापति हैं। देहाभिमान दुस्तर समुद्र है। इस लंका में मोह रुपी रावण, अहंकार रुपी उसका भाई कुंभकर्ण और शान्ति नष्ट करने वाला कामरुपी मेघनाद है। अन्य दुर्गुण राक्षस हैं। इन राक्षसों के साथ इंद्रियरुपी राक्षसियां भी हैं। जीव रुपी विभीषण है जो इन राक्षसों के राज्य से भयभीत होकर निवास कर रहा है। अब आप ज्ञानरुपी दशरथ के घर भक्ति रुपी कौशल्या के द्वारा अवतार लीजिए। व्यावहारिक ज्ञान रुपी सुग्रीव समुद्र में पुल बंधवाने में आपकी सहायता करेंगे। वैराग्य हनुमान लंका को जला डालेंगे। तदन्तर जीव रुपी इस दास के लिए मोह रुपी रावण का वंश सहित नाश करके तुलसी के हृदय में सीता-लक्ष्मण सहित निवास कीजिए।''

सोचिए इस प्रकार के भाव को लेकर कौन आरती करना चाहेगा। यही कारण है कि विनय-पत्रिका की लोक-प्रियता संसार में अंगुलियों पर गिने जाने वाले अनुरागियों तक सीमित है। इसे पढ़ने में लाखों में एक ही आंख मिलेगी।

रामचरित मानस के पश्चात यदि तुलसी के किसी ग्रंथ को सर्वाधिक महत्व मिला है तो वह विनय पत्रिका ही है। गोस्वामी जी की निर्मल आत्मा इसी ग्रंथ में मानव के अन्तस की विभिन्न दशाओं का चित्रण तो देखने को मिलता ही है किन्तु तुलसी के व्यक्तित्व का अंकन भी इसमें प्रतिबिंबित हुआ है। उस ओर हमारा ध्यान अवश्य जाना चाहिए। उन्होंने स्वयं अपने जीवन में जिस दैन्य दारिद्र तथा अपमान को भोगा था, वैसा आज का मानव नहीं भोग रहा है।

कलि के प्रभाव से आक्रान्त सम्पूर्ण विश्व प्रांगण की, बर्बरता को तुलसी ने अपनी आंखों से देखा था। उस युग के बहुत से रचनाकारों ने भी उसे देखा था, किन्तु जीवनभर कवि कर्म रत तुलसी ने तो अपने जीवन में कलि के कष्टमयी ताप से मुक्ति पाने की चेष्टा की और न विनती। उन्होंने जो कवि कर्म चुना उसी का परिणाम है विनय पत्रिका, यह पत्रिका और कुछ नहीं बल्कि तुलसी की विशिष्ट भावभूमि की परिचायक है। इसमें न किसी प्रकार का कपटाचरण है न दुराव। यह उनके हृदय की सरल एवं भावात्मक दिव्य अनुभूतियों का ऐसा संग्रह है जहां चलकर कवि दैहिक, दैविक और भौतिक वासनाओं से ऊपर उठकर अपने को प्रिय के समक्ष प्रस्तुत करता है। वहां पहुंचकर अपने उपास्य से उसकी प्रेमपूर्ण बातें भी होती हैं, जिसमें मनुहार और अनुहार दोनों स्थितियां भक्तों के उपास्य के मध्य आ जाती हैं तथा दोषों का खंडन-मंडन भी होता है। भक्त और भगवान यहां सस्वरुप आना चाहते हैं किन्तु उस आवेग से निकलकर अतिशीघ्र उसका प्रेम विनय में परिणित हो जाना है। अपने एक-एक अवगुण को खोलकर हृदय से पुष्य की भांति अपने उपास्य के चरणों में अर्पित कर देना है। अपने प्रभु के सम्मुख वह अपने को इतना तुच्छ सिद्ध कर देता है कि भक्ति के क्षेत्र में उसके शील की तुलना में अन्य ठहर नहीं पाते। अपनी लघुता और

दीनता का जो चित्र वह भाषा के माध्यम से विनय पत्रिका में प्रस्तुत करता है वह भक्ति साहित्य की अमूल्य निधि बन जाता है।

इस प्रकार दास-भक्ति के भावों से ओतप्रोत होकर वे भगवान राम के दरबार में पहुंचते हैं और जीवन का एक-एक क्षण अपने आराध्य के चरणों में अर्पित कर देते हैं। भक्ति की चरमावस्था आत्मसमर्पण ही है। उनकी दृढ़ है कि उनके उपास्य में वह शक्ति है जो अनन्त लोक-कल्याणकारी हैं और उनके समान दीनों पर दया करने वाला कोई नहीं है। विनय पत्रिका के प्रसंग में उन्होंने शंकर, गंगा, यमुना, देवी, लक्ष्मन, हनुमान, भरत, गणेश आदि की वंदना अवश्य की है किन्तु इन सारी स्तुतियों के मूल में उनकी मान्यता राम भक्ति से ही है। ये सभी देवता राम दरबार के पहरेदार हैं, अत: जब तक उनकी स्तुति नहीं करेंगे, वे उन्हें राम के दरबार में प्रवेश नहीं करने देंगे। अत: वे उन स्तुतियों के माध्यम से अपनी दीनता का अनुभव उन्हें कराते हैं और उनसे राम-भक्ति की याचना करते हैं। साथ ही उनके माध्यम से कम से कम शब्दों में स्तुत्य के समग्र व्यक्तित्व का भी हृदयग्राही वर्णन करते हैं।

सर जी.ए. ग्रियर्सन के अनुसार ''भक्ति का एक लक्ष्य सदगुणों का संवर्धन है और दूसरा दुर्गुणों का निराकरण। वस्तुत: यह दोनों ही अन्योयाश्रित हैं। अंधकार हटेगा तभी प्रकाश मिलेगा। विनय पत्रिका में यही भाव मुख्य है। पर भाषा की किलिष्टता के कारण बहुत पढ़ने वाले इसको पढ़ने का साहस नहीं करते। निष्कर्ष रुप से हम कह सकते हैं कि विनय पत्रिका में तुलसी ने अपने ज्ञान का वह हीरा प्रस्तुत किया है जो निरन्तर तपस्या की दग्ध अग्नि भट्टियों में तपते-तपते निर्मित हुआ है। वह विद्वता की ऐसी शिला है जो जीवन के कठोर सत्य को लेकर निर्मित हुई। इस कृति को पढ़कर ऐसा लगता है जैसे उन्होंने अपने अंत:करण में एक विशिष्ट प्रकार की अकुलाहट, घबराहट और संसार के प्रति वैराग्य को लेकर विनय पत्रिका की सर्जना की है।

एक बात और। विनय पत्रिका में आरती के संबंध में आरंभ में ही तुलसी ने अपनी बात इसलिए रखी कि अन्त में वे अपने उद्धार की कामना अपने उपास्य से करते हैं। हो सकता है उन्हें यह ध्यान अवश्य होगा कि ऐसी आरती शायद ही भक्तों को ग्रहण हो सके। किन्तु ऐसा करके वे यह सिद्ध करना चाहते थे कि उनके द्वारा भक्ति की प्रतिबद्धता साधना को लेकर है, परम्परा या अधिकार को लेकर नहीं। ऐसे भाव को स्वीकार करने में कठिनाई अवश्य होती है, किन्तु जीवन का लक्ष्य आत्मानुभूति है। वे इस मर्म को समझने का प्रयास करते हैं। आशा है पाठकों को पद संख्या 47 एवं 48 का यह मन्तव्य अवश्य ध्यान में आएगा और उनका मन दिन-रात रघुवर की ऐसी आरती करने में लगा रहेगा।

--------■ ■--------

मानस-गोष्ठी एवं गौ-पालन के लिए जन जागरण

गुना-अशोकनगर जिलों के मानस-प्रेमी रघुवंशी-जनों के सद् प्रयास से- श्रीरामचरितमानस के नियमित पठन-पाठन एवं गौ-पालन के प्रति निरंतर प्रभावी जनजागरण चल रहा है ।

रघुवंशी बहुल ग्रामों में मासिक क्रम से संचालित-मानस-संगोष्ठी-माह जुलाई 18 का आयोजन-अशोकनगर जिले के ग्राम-खासखेडा में श्री हरीसिंह रघुवंशी(सांसद-प्रतिनिधि) के परिजनों द्वारा कराया गया, जिसमें सैकडों मानस-प्रेमी उपस्थित हुये। अगस्त 18 में ग्राम-डुंगासरा की पठार (यज्ञ-सम्राट पूज्य संत श्री कनकबिहारी दास जी महाराज के वर्तमान- चतुर्मास-स्थल) पर महाराज जी के सानिध्य व हजारों धर्माबलम्बियों की उपस्थिति में मानस-संगोष्ठी का भव्य आयोजन हुआ। तदोपरांत सितम्बर माह की संगोष्ठी आरोन क्षेत्र के ग्राम-भौंरा (गोलजी महाराज की पहाडी) में संपन्न हुई। संगोष्ठी में- पूर्व सरपंच एडव्होकेट श्री पूरन सिंह रघुवंशी(खामखेडा) द्वारा विशाल भण्डारा दिया गया,जिसमें सैकडों जनों ने भोजन- ग्रहण किया। अन्य व्यवस्थाओं में-श्री किशन सिंह,मोहन सिंह आदि अनेक भौंरा-निबासी जन सक्रिय रहे। उल्लेखनीय है कि- रघुवंशी समाज- जनों द्वारा संचालित इन संगोष्ठियों में- श्रीरामचरितमानस एवं गीता- प्रबोधनी आदि धर्म-ग्रन्थ बाजार मूल्य से 20% कम दर पर सभी को उपलब्ध कराये जाते हैं, ताकि-घर-घर सद्-साहित्य पहुँचे और उसका पठन-पाठन हो।

विनय-पत्रिका में वंदना

पं.रामकिंकर उपाध्याय

विनय-पत्रिका में वन्दना का कम विस्तार नहीं है पर यहां कृति की सफलता के लिए रंचमात्र व्यग्रता नहीं है। ऐसा लगता है जैसे तुलसी यहां कृति और कृतिकार की धारणा से पूरी तरह मुक्त हो चुके हैं। यह दूसरों को पढ़ने के लिए लिखी ही नहीं गयी है। अत: दूसरों पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा इसकी चिन्ता भी उन्हें क्यों होने लगी? फिर भी वन्दना के विस्तार के पीछे यहां एक दूसरी ही भावना है। इसमें जिनकी वन्दना है उसमें से अधिकांश से वे एक ही याचना करते हैं कि वे कृपा करके उन्हें राघव की चरणों में भक्ति और प्रीति का वरदान दें। वन्दना प्रसंग में कुछ ऐसे भी भक्त हैं जो निरन्तर श्रीराम के समीप रहते हैं उनसे वे एक भिन्न प्रकार का अनुरोध करते हैं। वे प्रभु तक जो पत्रिका पहुंचाने जा रहे हैं, उसे पहुंचाने वाला तो चाहिये ही पर साथ ही उस पत्रिका में जो प्रार्थनाएं की गयी हैं उनकी स्वीकृति के लिए समर्थन की भी तो आवश्यकता है और इसके लिए वे श्री भरत, लक्ष्मण और आंजनेय का आश्रय चाहते हैं। इसके लिऐ वे बड़े ही भावपूर्ण शब्दों में उनकी स्तुति करते हैं। फिर जगतजननी सीता की तो वे बड़ी ही भाव भरी मनुहार करते हैं। क्योंकि अन्तरंग और एकान्त क्षणों में वे ही उनकी करुण दशा का वर्णन प्रभु को सुनाकर उन्हें तुलसी पर कृपा करने के लिए प्रेरित करेंगी।

रामचरित मानस में भी वे जगतजननी की वन्दना करते हैं, पर उसमें भावुकता, विनम्रता और करुणा का वह उच्छवास नहीं है जिसका दर्शन विनय-पत्रिका में होता है। रामचरित मानस में मॉ से उनकी मांग भी तो भिन्न प्रकार की है। वहां वे उनसे निर्मल मति की याचना करते हैं। रामचरित मानस के तुलसी उस बालक की भांति हैं जो विद्यालय में शिक्षित होकर आया है, जिसके मन में मॉ की महिमा का बोध है, जो श्रद्धा और आदरपूर्वक मॉ के चरणों में नमन करता है उनकी सराहना करते हुए आशीर्वाद मांगता है कि उसकी बुद्धि प्रखर और पवित्र बनी रहे जिससे वह नव जीवन की परीक्षा में उत्तीर्ण हो सके। मॉ अपने पुत्र की योग्यता से सन्तुष्ट है और बालक को आशीर्वाद देती है कि तुम्हारी बुद्धि निरन्तर तुम्हारा पथ प्रदर्शित करती रहे। पर विनय-पत्रिका के तुलसी उस नन्हें बालक की भांति हैं जो अभी अपनी सारी आवश्यकताओं के लिए माता-पिता पर आश्रित है। फिर भी उसे पिता से कुछ मांगने में संकोच लगता है। मॉ और उसके बीच संकोच का झीना आवरण भी नही है। वह बड़े प्यार और अधिकार से मॉ के आंचल का छोर पकड़ लेता है। वह मॉ के लिए स्तुति पाठ नहीं करता। वह तो सीधे स्पष्ट शब्दों में अपनी मांग रख देता है। पिता से उसे कोई वस्तु मांगनी है, तो मां को उसकी मांग पिता के समक्ष रखकर उसे पूरी करना है। मॉ का हृदय वात्सल्य से भरा हुआ है। बालक को स्नेह से दुलराती है, पुचकारती है। आशीर्वाद की औपचारिकता का यहां अभाव है। मानस और विनय-पत्रिका की पंक्तियों से यह अन्तर स्पष्ट हो जाता है-

जनक सुता जग जननि जानकी।
अतिसय प्रिय करुना निधान की।।
ताके जुग पद कमल मनावउँ।
जासु कृपा निरमल मति पावउँ।।
कबहुँक अंब, अवसर पाइ।
दीन, सब अंग हीन, छीन,
मलीन, अघी अघाइ।
नाम लै भरै उदर एक
प्रभु-दासी-दास कहाइ।।
बुझिहैं 'सौ है कौन',
कहिबी नाम दसा जनाइ।
सुनत राम कृपालु के
मेरी बिगरिऔ बनि जाइ।।
जानकी जगजननि जन
की किये बचन सहाइ।
तरै तुलसीदास भव तव
नाथ-गुन-गन गाइ।।

मैथिली की वन्दना में ही यह अन्तर नहीं है। अन्य अनेक वन्दित पात्रों के सन्दर्भ में भी यही भेद दिखायी देता है। रामचरित मानस की वन्दनाओं में प्रगाढ़ आदर का दर्शन तो होता है पर अपनत्व की वह अनुभूति नहीं होती जो विनय-पत्रिका के पदों में दिखायी देती है। ऐसा लगता है जैसे मानस में सब कुछ मर्यादित है। कवि अपने उद्देश्य को दृष्टिगत रखकर सीमित शब्दों के प्रयोग से 'अरथ अमित अरु आखर थोरे' को सार्थक सिद्ध कर देता है। विनय-पत्रिका इन बाध्यताओं से मुक्त हैं। इसमें कवि चाहे जितने शब्दों का प्रयोग करता है, वह अपने हृदय के उद्गारों को खुलकर

प्रकट कर देता है। रामचरित मानस में जब वे किसी पात्र से बोलते हैं तो ऐसा लगता है जैसे उस पात्र से घनिष्ठ परिचित होते हुए भी सभा में वार्तालाप कर रहे हैं जहां यत्किंचित दूरी बनाये रहना अनिवार्य है। विनय-पत्रिका में औपचारिकता से दूर वे घर में वार्तालाप करते हुए से प्रतीत होते हैं। दृष्टान्त के रुप में लक्ष्मण वन्दना की पंक्तियों को लिया जा सकता है। रामचरित मानस में वे उनके ऐश्वर्य और गुण का वर्णन करते हुए अनुकूल रहने का अनुरोध करते हैं। पर विनय-पत्रिका में वे बड़े प्यार और अपनेपन का सम्बोधन देते हुए उन पर प्रगाढ़ विश्वास प्रकट करते हैं--

लाल लाड़िले लखन, हित हौ जन के।
सुमिरे संकटहारी सकल सुमंगलहारी,
पालक कृपालु अपने पन के ।।
धरती-धरनहार भंजन-भुवन भार,
अवतार साहसी सहसफन के ।।
सत्यसंघ सत्यब्रत, परम धरमरत,
निरमल करम बचन अरु मनके ।।
रुप के निधान धनु-बान पानि,
तून कटि, महावीर विदित, जितैया बड़े रनके।।
सेवक-सुख-दायक, सबल, सब लायक,
गायक जानकीनाथ गुन गनके ।।
भावते भरत के सुमित्रा-सीता के दुलारे,
चातक चतुर राम स्याम घनके ।।
बल्लभ उरमिला के, सुलभ सनेहबस,
धनी धन तुलसी से निरधन के ।।

उपरोक्त पद का प्रारंभ होता है ''लाल लाड़िले लखन'' के मधुर और अपनत्व भरे सम्बोधन से जिसमें यह विश्वास प्रकट किया गया है कि ''आप तो मेरे सर्वदा के हितैषी हैं।'' पद के मध्य में उनके ऐश्वर्य सूचक गुणों का भी वर्णन किया गया है पर अन्तिम पंक्तियों में पुन: वही स्नेह और दुलार भरे नातों की स्मृति दिलायी गयी है। आप भाई भरत के प्रिय हैं, मॉ सुमित्रा और सीता का दुलार आपको प्राप्त है। हे उर्मिला के प्रियतम! आप स्नेह से अत्यन्त सुलभ हो जाने वाले स्वभाव के हैं और तुलसी जैसे निर्धन के तो आप धनी और धन दोनों हैं। सत्य तो यह है कि पद का अनुवाद कर देने पर उन शब्दों की मिठास कम हो जाती है जिनका प्रयोग तुलसी ने किया है। पर इतना तो असंदिग्ध शब्दों में कहा जा सकता है कि विनय-पत्रिका की इन रससिक्त पंक्तियों के समक्ष मानस की पंक्तियां उतनी रसीली प्रतीत नहीं होती हैं। पर इसे भी संबंध के क्रमिक विकास के रुप में देख सकते हैं। विनय-पत्रिका मानस की रचना के पश्चात लिखी गयी है। रामचरित मानस में जब वे प्रभु की परिकरों के साथ वन्दना करते हैं तब ऐसा लगता है जैसे कवि का इस राज सभा में पहला प्रवेश है। वे सभा के ऐश्वर्य भरे वातावरण से चकित हैं। यद्यपि वहां का सारा वातावरण शील और सौजन्य से भरा हुआ है। पर कवि वहां उपस्थित सदस्यों को समादर और संभ्रम के भाव से देखता है। अभी उसका परिचय नया है। वे अपनी रचना के माध्यम से जन सभासदों का अभिनंदन करते हैं। महाराजाधिराज के चरणों में अपनी विनत शब्द पुष्पांजलि अर्पित करते हैं। पर विनय-पत्रिका लिखते समय वह परिचय इतना प्रगाढ़ हो चुका है कि वहां किसी प्रकार की दूरी और भय का प्रश्न ही नहीं रह गया है। जिनसे प्रथम परिचय में बोलते समय वह निरन्तर सजग थे कि किसी प्रकार ऐसा कोई प्रश्न न निकल पड़े जिसमें समादर में न्यूनता का बोध हो। अब उन्हीं से व्यंग्य विनोद करने में भी उन्हें संकोच का अनुभव नहीं होता। हास-परिहास उलाहना ही नहीं अब तो वह कभी-कभी धमकाने पर भी उतर जाते हैं। इसके अनेक दृष्टान्त देखे जा सकते है। रामचरित मानस और विनय-पत्रिका में समान रुप से भगवान शिव की वन्दना और उनकी महिमा के गीत हैं। पर मानस में उनके ऐश्वर्य, औदार्य और कृपालुता का ही स्मरण किया गया है, विनय-पत्रिका में इन विशेषताओं का वर्णन करते-करते कवि उलाहना देने भी बैठ जाता है। वह कह उठता है कि आपकी उदारता के विषय में मैं बहुत कुछ सुनता आया हूं। उसे यथार्थ मानकर ही मैंने भी आपके गुणों के गीत गाये हैं, पर लगता है यह सब दूसरों के विषय में ही यथार्थ है। जहां तक मेरा अनुभव है, आप मेरे लिये तो कृपणता की पराकाष्ठा तक पहुंच गये हैं। इस प्रसंग में मानस और विनय-पत्रिका का पार्थक्य दृष्टव्य है-

कुंद इंदु सम देह उमा रमन करुना अयन।
जाहि दीन पर नेह करउ कृपा मर्दन मयन।।
-- -- --
जरत सकल सुर बृंद विषम
गरल जेहिं पान किय।
तेहि न भजसि मन मंद
को कृपाल संकर सरिस।।
-- -- --
कस न दीन पर द्रवहु उमाबर।
दारुन बिपति हरन करुना कर।।
बेद पुरान कहत उदार हर।
हमरि बेर कस भयउ कृपिनतर।।
कवनि भगति कीन्ही गुननिधि द्विज।
होइ प्रसन्न दीन्हेहु सिव पद निज।।

जो गति अगम महामुनि गावहिं।
तब पुर कीट पतंगहु पावहिं।।
देहु काम-रिपु ! राम-चरन-रति।
तुलसिदास प्रभु ! हरहु भेद मति।।

मानस में वे शिवपुरी काशी की महिमा का वर्णन करते हुए पाठकों से काशी में रहने का अनुरोध करते हैं। स्वयं उनका भी काशी के प्रति प्रगाढ़ अनुराग था। उन्होंने जीवन की एक दीर्घ अवधि को काशी में ही व्यतीत किया था। उनका महाप्रयाण भी इसी दिव्य पुरी में हुआ था। विनय-पत्रिका में भी वे इस मोक्ष दात्री पुरी का बार-बार स्मरण करते हैं। पर इसका एक दूसरा पक्ष भी था। काशी में रहते हुए उन्हें कटु अनुभव भी कम नहीं हुए। वहां का एक वर्ग उनका सर्वदा विरोध करता रहा, उन्हें नाना प्रकार से उत्पीड़ित करने का प्रयास होता रहा। इससे उन्हें असाधारण व्यथा हुई। विनय-पत्रिका में वे इसके लिए भी महादेव को ही उलाहना देते हैं। वे स्पष्ट शब्दों में कहते हैं। ''आपकी पुरी में रहते हुए भी मैंने आपसे कभी कुछ नहीं चाहा। पर आज जो मुझ पर विपत्तियां आ रही हैं वे आपके सेवकों की ही करतूत है। ये सब अत्यन्त क्रूर कर्मा हैं। इन दुष्टों को आप रोकिये क्योंकि वे तुलसी को उखाड़ कर सिहोरी लगाना चाहते हैं--

मुक्ति जन्म महि जान ग्यान, खानि अघ हानि कर।
जहँ बसि संभु भवानि सो कासी सेइअ कस न ।।
-- -- --
देव बड़े दाता बड़े शंकर बड़े भोरे।
किए दूर दुख सबनि के, जिन्ह जिन्ह कर जोरे ।।
सेवा, सुमिरन, पूजिबौ, पात आखत थोरे।
दिये जगत जहॅ लगि सबै सुख, गज, रथ घोरे।।
गांव बसत बामदेव, मैं कबहूं न निहोरे।
अधिभौतिक बाधा भई, ते किंकर तोरे।।
बेगि बोलि बलि बरजिये, करतूति कठोरे।
तुलसी दलि रुँध्यां चहैं, सठ साखि सिहोरे।।

आंजनेय के प्रति उनकी प्रगाढ़ भक्ति का कहना ही क्या? उन्हीं की कृपा से प्रभु रामचन्द के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। श्रीराम चरित के प्रारंभ में तो उसकी वन्दना की ही गयी है, रामचरित का समापन भी वे पवनपुत्र की प्रगाढ़ निष्ठा और उनकी अद्वितीयता की घोषणा के साथ करते हैं। विनय-पत्रिका में भी प्रभु के समस्त भक्तों में वे अंजनीनंदन को ही सर्वाधिक स्थान देते हैं। पूरे ग्यारह पदों में उनकी स्तुति की गयी है, उसके विभिन्न पदों का रसास्वादन करते हुए आंजनेय के अनेकों उत्कृष्ट और अद्भुत चित्र सामने आ जाते हैं। पर विनय-पत्रिका में पवनपुत्र के प्रति जो अपनत्व भरा अधिकार है उसका दर्शन मानस में नहीं होता। जीवन के प्रत्येक, मधुर, कटु अवसरों पर उन्हें हनुमानजी की याद आती है। कभी उनकी प्रार्थना और पुकार तत्काल सुनी गयी तो कभी उन्हें ऐसा भी लगा कि जैसे उनकी पुकार को अनसुना कर दिया गया। ऐसे अवसरों पर वे उन्हें उलाहना देना नहीं भूलते। उन्हें कष्ट होता है, जब भौतिक सामर्थ्य से युक्त कोई व्यक्ति उन्हें सन्त्रस्त करने का प्रयास करता है, पर इससे भी अधिक ठेस उन्हें आंजनेय की उदासीनता से लगती है। वे इस उपेक्षा का कारण ढूंढते हैं। उन्हें अपनी कमियों का भान है, पर वे पवनपुत्र को उलाहना देते हुए पूछते हैं कि क्या मुझमें पहले इस प्रकार की त्रुटियां नहीं थीं? मैं तो तभी से ऐसा ही हूं। फिर उस समय आपको मुझमें क्या दिखायी दे गया था जिससे रीझ कर अपना बैठे थे और अब ऐसा कौन सा बड़ा अपराध बन पड़ा है जिससे आपने मुझे बिसरा दिया है? इससे भी आगे बढ़कर वे उलाहना देते हुए पूंछ बैठते हैं कहीं ऐसा तो नहीं आपमें ही कोई परिवर्तन आ गया है? क्या आपका वह पुराना बल समाप्त हो गया है? आपकी वह ओज भरी गर्जना कहां चली गयी जिसे सुनकर रावण भी कांप उठता था? या अब आप इतने गर्वीले हो गये हैं कि मुझ जैसे साधारण व्यक्ति की ओर दृष्टि डालने में आपको हीनता का अनुभव होता है? इस तरह की आड़ी-टेढ़ी प्रेम भरी फटकार पर पवनपुत्र मुस्कराने लगते हैं। वे सहायता के लिए आ खड़े होते हैं। उनकी ऐसी कृपा देखकर तुलसी गदगद हो जाते हैं। उन्हें पश्चाताप होने लगता है कि इस तरह की कटु भाषा का प्रयोग मैंने क्यों किया और वे क्षमा भी मांगने लग जाते हैं। कुल मिलाकर देखने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि आंजनेय से उनका नाता समत्व में स्थित महात्मा की तरह न होकर उस बाल की भांति है जिसे मॉ से रीझते-खीझते देर नहीं लगती। जिसे मांग के पश्चात थोड़ी देर भी असह्य है। जो विलम्ब होते देखकर बिगड़ खड़ा होता है। मां की ओर से मुख घुमा लेता है, पर अगले क्षण ही मॉ के द्वारा अभीष्ट वस्तु मिलते ही सारी बातें भूलकर मॉ की गोद में आकर उसकी प्रशंसा करने लग जाता है। निश्चित रुप से रीझ-खीझ, मनुहार-प्यार का यह आनंद विनय-पत्रिका में ही है, मानस में नहीं।

-श्रीरामचरितमानस एवं विनय पत्रिका से साभार

--------■ ■--------

जरूरी है प्राण को प्रबुद्ध करना

साधना और योग हमारे शरीर, मन और स्वास्थ्य के लिए नितान्त जरुरी है। साधना करते समय हमें क्या करना चाहिए यह सवाल कई बार मन में उठता है। क्या हमें अपने प्राण को कुचलना चाहिए या उसके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, इसका उत्तर देते हुए महर्षि श्रीअरविन्द ने कहा है कि यह बिलकुल सच है कि हमारे मानसिक विधान या सिद्धान्त के अनुसार असहमत प्राणिक सत्ता पर बल प्रयोग नहीं होना चाहिये। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि प्राण अपनी सनक के मुताबिक जो मर्जी करे। बाध्य करना तरीका नहीं है, बल्कि आंतरिक परिवर्तन होना चाहिये। इसके लिए उच्चतर चेतना को, जो प्राणिक कामना की वस्तुओं से अनासक्त है, निम्न प्राण को मार्गदर्शित, प्रबोधित तथा रुपान्तरित करना चाहिये। किन्तु इसको विकसित करने के लिए ऐसी मनोवृत्ति अपनानी चाहिये जिसमें निम्न प्राण के दावों की संतुष्टि को कम महत्व दिया जाये, कुछ सीमा तक नियंत्रण, संयम हो जो इन चीजों के किसी भी कोलाहल से ऊपर रहना चाहिये। ऐसी चीजों को जैसे भोजन को, उनके समुचित स्थान में सीमित कर देना चाहिये। निम्न प्राण का अपना स्थान है। इसे कुचलना या मार देना नहीं चाहिये बल्कि इसे रुपान्तरित किया जाना चाहिये। दोनों किनारों से पकड़ना चाहिये, ऊपरी किनारे पर अधिकार और नियंत्रण तथा निचले किनारे पर उचित उपयोग होना चाहिये। मुख्य वस्तु है आसक्ति तथा कामना से छुटकारा पाना। तभी पूर्ण रुप से समुचित उपयोग संभव होता है।

श्रीमातृवाणी के अनुसार जब हम पूर्णता की मात्रा को प्राप्त कर लेंगे जो कि हमारा लक्ष्य है, तब हम देखेंगे कि जिस सत्य की खोज हम कर रहे हैं वह चार प्रधान चीजों से बना है- प्रेम, ज्ञान, शक्ति और सौन्दर्य। सत्य के ये चारों रुप अपने आप हमारी सत्ता के अन्दर अभिव्यक्त होंगे। चैत्य पुरुष होगा सच्चे और शुद्ध प्रेम का वाहन, मन होगा अभ्रान्त ज्ञान का यन्त्र, प्राण प्रकट करेगा एक अदम्य शक्ति और सामर्थ्य, और शरीर बन जायेगा पूर्ण सौन्दर्य और पूर्ण सामंजस्य की प्रतिमा। श्रीमातृवाणी में कहा गया है कि तुम्हें अपनी गतिविधियों के मूल का स्पष्ट बोध होना चाहिये, क्योंकि सत्ता के अन्दर परस्पर विरोधी इच्छायें उठती हैं- कुछ तुम्हें यहां धकेलती हैं तो कुछ वहां और इससे स्पष्ट ही जीवन में अजराकता उत्पन्न हो जाती है। यदि तुम स्वयं अपना निरीक्षण करो तो देखोगे कि जैसे ही तुम कोई ऐसी चीज करते हो जो तुम्हें थोड़ा चिंतित कर देती है तो तुरन्त ही मन कोई अनुकूल कारण दिखाकर तुम्हारा समर्थन कर देता है- यह मन हर चीज पर सुनहरा मुलम्मा चढ़ा सकता है। ऐसी परिस्थितियों में अपने आपको जानना कठिन होता है। यदि कोई ऐसी परिस्थिति में अपने आपको जानना चाहे तो ऐसा करने के लिए और मनोमय सत्ता के छोटे-छोटे सभी मिथ्यात्वों को स्पष्ट रुप में देखने के लिए उसे पूर्णत: सच्चा होना चाहिये।

यदि तुम अपने सारे दिन की विभिन्न गतियों और प्रतिक्रियाओं का अपने मन द्वारा सिंहावलोकन करते रहो, ठीक उसी तरह जैसे कोई एक ही चीज को अनिश्चितकाल तक दोहराता रहता है तो इससे तुम्हारी प्रगति नहीं होगी। इस अवलोकन के द्वारा यदि प्रगति करनी हो तो तुम्हें अपने अन्तर में कोई ऐसी चीज ढूंढनी होगी जिसके प्रकाश में तुम स्वयं अपने जज बन सको, वह कोई ऐसी चीज होगी जो तुम्हारे लिए तुम्हारी सत्ता के सर्वोत्तम अंग का प्रतिनिधित्व करती है जिसमें कुछ प्रकाश है, कुछ सद्भावना है और जो वास्तव में प्रगति से घनिष्ठ संबंध रखती है। उस चीज को अपने सामने रखो और सबसे पहले सिनेमा की तरह उन सब चीजों को अपने सामने से गुजरने दो जिन्हें तुमने किया है जिन्हें तुमने अनुभव किया है, तुम्हारे जितने भी आवेग, जितने भी विचार आदि हैं सबको उसी तरह गुजरने दो, फिर उन्हें श्रृंखलाबद्ध करने का प्रयास करो यानी यह पता लगाओ कि अमुक के बाद अमुक क्यों हुआ? तुम्हारे सामने जो प्रकाशमान परदा है उस पर दृष्टि डालो, कुछ चीजें तो ठीक गुजर जाती हैं, उनकी भी छाया परदे पर नहीं पड़ती। इसके विपरीत कुछ अन्य चीजें थोड़ी सी छाया डालती हैं और फिर कुछ ऐसी होती हैं जो बिलकुल ही काली और विरक्तिजनक छाया डालती हैं।

उपरोक्त क्रिया तुम्हें सच्चाई से करनी होगी, मानो तुम कोई खेल खेल रहे हो। इन परिस्थितियों में मैंने ऐसा-ऐसा किया, इस तरह अनुभव किया, उस तरह विचार किया, मेरे सामने ज्ञान और आत्म-प्रभुत्व का आदर्श है तो मेरा यह कार्य इस आदर्श के अनुसार था या नहीं? वह यदि उसके अनुसार था तो परदे पर कोई छाया नहीं छोड़ेगा और परदा स्वच्छ पारदर्शक बना रहेगा तथा उसके विषय में चिंता करने की कोई जरुरत नहीं होगी। यदि वह उसके अनुकूल नहीं था तो उसकी एक छाया पड़ेगी। उसकी छाया क्यों पड़ी? इस काम में कौन सी चीज आत्म ज्ञान और

आत्म प्रभुत्व के संकल्प के विपरीत थी? अधिकतर तुम देखोगे कि वह चीज अचेतनता से मिलती जुलती है- तब तुम उसे अचेतन चीजों के पुलिन्दे में दाखिल कर दो और यह निश्चय कर लो कि अगली बार कुछ भी करने से पहले तुम सचेतन रहने का प्रयत्न करोगे। किन्तु अन्य विषयों में तुम देखोगे कि तुम्हारे कार्य को, तुम्हारे विचार आदि को विकृत करने के लिए जो चीज आई थी वह एक कुरुप, तुच्छ, एकदम काली अहम्भावना थी। तब तुम इस अहं को अपने प्रकाश के सम्मुख रखो और अपने आपसे पूछो इसे यह अधिकार क्यों है कि यह मुझसे वैसा कार्य कराये, वैसा विचार कराये और ऐसे समय किसी भी प्रकार की कोई बेढंगी व्याख्या मत करो, बल्कि अनुसंधान करो और फिर तुम्हें अपनी सत्ता के एक कोने में एक ऐसी चीज मिलेगी जो यह सोचती और कहती होगी, ओह नहीं, मुझे और सब कुछ स्वीकार है पर यह नहीं। तुम देखोगे कि यह कोई क्षुद्र मिथ्याभिमान है, आत्मप्रीति की कोई क्रिया है, कहीं छिपी हुई कोई अहं भावना है, इस प्रकार की सैकड़ों चीजें होती हैं। तब अपने आदर्श के प्रकाश में इन चीजों की ओर एक गहरी दृष्टि डालो, इस क्रिया को पोसना मेरे आदर्श की खोज और प्राप्ति के अनुकूल है या नहीं, इस छोटे से अंधियारे कोने को मैं इस प्रकाश के सामने रख रहा हूं जिससे कि यह प्रकाश इसके अंदर प्रवेश कर जाये और यह तिरोहित हो जाये। तब यह खेल समाप्त हो जाता है। किन्तु तुम जानते हो इससे तुम्हारे सारे दिन का खेल समाप्त नहीं हो जाता है। क्योंकि ऐसी और बहुत सी चीजें बाकी रह जाती हैं जिन्हें प्रकाश के सम्मुख लाना है। पर यदि तुम यह खेल जारी रखो- यदि तुम इसे सच्चाई के साथ करो तो यह सचमुच में एक खेल ही है- तो छः माह के अंदर तुम अपने आपको पहचान नहीं पाओगे और कहोगे कि अरे क्या मैं ऐसा था, असम्भव।

श्रीमातृवाणी में कहा गया है कि तुम चाहे पांच वर्ष के हो या बीस, पचास अथवा साठ, फिर भी तुम अपने आंतरिक प्रकाश के सम्मुख प्रत्येक चीज को रखकर इस प्रकार अपने आपको रुपान्तरित कर सकते हो। तुम देखोगे कि जो तत्व तुम्हारे आदर्श से मेल नहीं खाते वे सामान्यतया ऐसे तत्व नहीं हैं जिन्हें तुम्हें अपने अंदर से पूरे का पूरा निकाल बाहर करना हो। वे बस ऐसी चीजें हैं जो अपने स्थान पर नहीं हैं। यदि तुम हर चीज को अपने विचारों, अपनी भावनाओं और अपने आवेगों आदि को- अपने आंतरिक प्रकाश अर्थात चैत्य केंद्र के इर्द गिर्द सुव्यवस्थित करो तो देखोगे कि सारी आंतरिक अस्त-व्यवस्तता प्रकाशमय सुव्यवस्था में बदल जाएगी।

--------■ ■--------

गुना जिला रघुवंशी महासभा की नई कार्यकारिणी

अखिल भारतीय रघुवंशी क्षत्रिय महासभा जिला गुना की नवीन कार्यकारिणी का गठन विगत माह संपन्न हुआ था। महासभा के संरक्षक-मण्डल एवं मतदाता सूची के सदस्यगण प्रत्येक दो-वर्षीय कार्यकाल हेतु अध्यक्ष पद का निर्वाचन करते हैं। अभी तक के सभी गठन निर्विरोध होते आये हैं। इस वर्ष गुना-महासभा ने नवीन गठन हेतु- निर्वाचन अधिकारी बना कर- श्री दिनेश सिंह रघुवंशी धमनार को जिम्मेदारी सौंपी थी, जिन्होनें सूझ-बूझ के साथ निर्विरोध नवीन गठन कराया। इस गठन अनुसार- आगामी दो-वर्षीय कार्यकाल हेतु- श्री अर्जुन सिंह रघुवंशी(देवरी) को सर्व-सम्मति से महासभा का जिलाध्यक्ष पद प्राप्त हुआ।

तदोपरांत गत जुलाई माह में-निवृतमान जिलाध्यक्ष-श्री ओमप्रकाश सिंह रघुवंशी मगराना की विदाई एवं नव-निर्वाचित अध्यक्ष श्री अर्जुन सिंह रघुवंशी देवरी का पदभार-ग्रहण कार्यक्रम हुआ। यह कार्यक्रम एक भव्य समारोह के रुप में- श्री राजकुमार सिंह पगारा के प्रसिद्ध होटल- राज विलाश पैलेश गुना में आयोजित था। उपस्थित रघुवंशी जनों ने वरिष्ठ व युवा अध्यक्षों को फूल-मालाएँ पहना कर बधाई व शुभकामनाएँ दीं । तथा अध्यक्ष पद से निवृत हुये-श्री ओमप्रकाश सिंह जी को शाल- श्रीफल-पुष्पाहार के साथ अभिनन्दन- पत्र भी प्रदान किया। उल्लेखनीय है कि- प्रति वर्ष होने वाले प्रतिभा-सम्मान का कार्यक्रम भी इसी समारोह में सम्पन्न हुआ, जिसमें समाज के प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। मंच-संचालन प्रमोद रघुवंशी मगराना ने किया। एवं नव-निर्वाचित अध्यक्ष अर्जुन सिंह रघुवंशी ने समाज के सभी जनों को साथ लेकर चलने व समाज हित में अपनी सेवाएँ देते रहने का विश्वास दिलाया। इस अवसर पर रघुवंशी समाज की क्षत्राणि-मातृशक्ति जिलाध्यक्ष- श्रीमती अनुसुईया रघुवंशी व महिला कार्यकारिणी की पदाधिकारी तथा समाज की अनेक महिलाएँ भी समारोह में विशेष रुप से उपस्थित रहीं। अंत में सभी ने समारोह स्थल- होटल राज विलाश में ही सामूहिक स्वल्पाहार भी ग्रहण किया।

साहस ही है सफलता की जननी

जगन्नाथ सिंह मैयर

जन्म के समय मनुष्य के पास न तो सबल शरीर होता है और न ही प्रखर बुद्धि। बस होता है तो छोटे से बाल, हृदय में आशा और आत्मविश्वास की टिमटिमाती ज्योति, जिसको लेकर वह इस संसार में प्रवेश करता है। वह पूरी तरह से अन्जान व साधनहीन होता है। आशा और विश्वास के आलोक में वह अपने प्रयास और साहस के सहारे जीवन की राहें खोजता है और हर प्रकार की परिस्थितियों का सामना करते हुए बड़ी से बड़ी श्रेष्ठताओं व विभूतियों का स्वामी बन जाता है।

जीवन में आने वाले बड़े-बड़े संकटों को कठिन राहों और कुटिल चक्रव्यूहों को भेदता हुआ अंततः वह अपना रास्ता खोज लेता है। उसके हृदय में जगमगाती लौ उसका पथ-प्रदर्शन करती है। आशा की शीतल किरण ही अधीर व अशान्त व्यक्तियों के चित्त को सांत्वना देती है, एवं उसके जीवन में छाये अंधकार को दूर करने उसे नव-विश्वास और संभावनायें प्रदान करती है। मनुष्य के मन में पैदा हुई आशा की किरण उसके अंतःकरण में छाए हुए अंधकार को दूर कर देती है। आशा एक वज्र शक्ति है जो मनुष्य को संघर्ष व विपरीत परिस्थितियों में भी आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। आशा मानव जीवन का वरदान है और निराशा अभिशाप। इस अटल सत्य को ध्यान में रखते हुए विवेकवान व्यक्ति आशा को अपने जीवन की सहचरी बनाते हैं, जो प्रतिक्षण उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है, यही कारण है कि आशावादी ही जीवन का सदुपयोग कर पाते हैं।

हम अक्सर देखते हैं कि बहुत से लोग प्रतिकूल परिस्थितियों में घबरा कर चिंतित होकर आशा का दामन छोड़ देते हैं और निराशा के घने अंधकार में फंसकर अपने जीवन को चौपट कर लेते हैं। लेकिन मनस्वी एवं बुद्धिमान व्यक्ति ऐसे विषम हालातों में भी हार नहीं मानते, वे जीत का लक्ष्य सामने रखकर अधिक सक्रिय होकर, अधिक साहस जुटाकर आगे हो जाते हैं। यह निराशा पर आशा व साहस की विजय है। आशावान व्यक्ति कभी भी निराशा को पास नहीं फटकने देते, वे कभी भी हार नहीं मानते और संघर्षो से मुकाबले को हर समय तैयार रहते हैं। जब व्यक्ति निराशा से ग्रस्त होता है तो निष्क्रियता उस पर आक्रमण करती है। उसका मन विषाक्त होता है और जीवन शक्ति क्षीण हो जाती है, ऐसे में जब

मनुष्य की चित्तवृत्ति दूषित हो जाती है तो वह अपने आदर्शो, श्रेष्ठ निश्चय एवं सत्कर्मो के संकल्पों को भी भुला देता है। जिन श्रेष्ठ विचारों का किला मनुष्य अनेकों प्रयत्न, अनगिनत कोशिशों के बाद खड़ा करता है, निराशा का एक ही विध्वंसात्मक विचार उसे अस्त-व्यस्त करके धूल-धूसरित कर देता है। किसी चीज का निर्माण कभी सफलता से नहीं किया जा सकता इसके लिए अथक परिश्रम जरुरी है, लेकिन उसका विध्वंस काफी सरलता से किया जा सकता है। ठीक इसी प्रकार आशा और विश्वास को बनाये रखना कठिन है और निराश होना आसान है।

मनुष्य शक्ति व ऊर्जा का भंडार है। उसे महान व ऊंचे तथा प्रशंसनीय कार्य करने चाहिए। निराशा का अहसास किसी भी स्थिति में खतरनाक ही होता है। किसी रोगी को जब निराशा घेर लेती है तो वह ऐसा विश्वास करने लगता है कि उसकी हालत लगातार बिगड़ रही है। निराशा के कीटाणु उसे अंदर ही अंदर खोखला करने लगते हैं। वह मौत की ओर धीरे-धीरे खिसकने लगता है। चट्टान की तरह सख्त इंसान को भी निराशा का भाव पल भर में चूर-चूर कर देता है। इससे बचे रहना तभी संभव है जब आशा की ज्योति विषमताओं में भी जलती रहे। इस संसार में विपत्तियों का आना स्वाभाविक है लेकिन सफलता उसी को मिलती है जो इनसे न घबराये। हमारे जीवन में सफलता-असफलता के अंश होते हैं लेकिन हमें यह हमेशा याद रखना चाहिए कि परिस्थितियां कितनी ही विषम क्यों न हों, अंततः दृढ़ निश्चय से उनका सामना किया जा सकता है। कवि की इन पंक्तियों को हमेशा याद रखना चाहिए कि ''नर हो न निराश करो मन को''। यदि हम असफलताओं से हिम्मत हार कर हाथ पर हाथ रखकर बैठ गये तो संसार की सारी सक्रियता नष्ट हो जायेगी। हमारा जीवन पुष्प हमेशा खिला रहे, कभी मुरझाने न पाये इसके लिए निराशा को अपने पास कभी नहीं फटकने देना चाहिए और हमेशा जीवन में यह मूलमंत्र याद रखना चाहिए कि साहस ही सफलता की जननी है।

-ग्राम हिनौतिया, जिला गुना, म.प्र. मोबा. 9993269165

कहानी

टूटे सपने

सोनाली करमरकर

गोविंद आज रश्मि के बारे में मां से बात करने अपने घर जाने वाला था। गोविंद को स्टेशन तक छोड़ने रश्मि भी साथ गयी थी। उसकी ट्रेन छूटने के बाद वापस आते वक्त वह रास्ते भर सोचती रही कि घरवालों को किस तरह मनाया जाये? सालों पहले पिताजी की कंपनी बंद पड़ गई थी। उसी साल उसका ग्रेजुएशन पूरा हुआ था। घर की कमाने वाली अकेली सदस्य थी रश्मि। जाहिर है कि हर बात उसे पूछकर की जाती। लिहाजा वह घर के हालात और ठीक करने के लिये जी-जान से जुट जाती।

धीरे-धीरे समय बीतता गया, भाई बहन बडे.हो गये, बहन की शादी हो गई। जब उसकी बहन घर आकर अपने पति और घरवालों के गुण गाती तो रश्मि को लगता कि अरे मैंने भी अब शादी के बारे मे सोचना चाहिये। उसने शरमाते हुए मां से बात छेड़ी।

एक दो साल और रूक जाओ जब भाई की नौकरी लगे तो हम तुम्हारा भी ब्याह कर देंगे। मां अपने पल्लू से आंखें पोछती बोली। रश्मि को अपने आप पर कोफ्त हुई कि उसने शादी की बात करके मां को रूला दिया।

दिन यूं ही बीतते रहे। मौसम बदलते रहे। रश्मि हमेशा सोचती कि 'हालात कभी तो बदलेंगे' हालात तो बदले लेकिन उसके नही, भाई के। एक दिन भाई ने मां से अपने शादी की बात छेड़ी।

'लेकिन बेटा पहले हमें रश्मि के बारे में सोचना चाहिये उसकी भी उम्र बढ़ रही है'। 'मां दीदी कि शादी की उम्र अब वैसे भी गुजर चुकी है उनके लिये तुम्हें कहां रिश्ता मिलने वाला है? मुझसे किसी बात की उम्मीद मत रखना।' कहकर वह जैसे ही पलटा, रश्मि को सामने खड़ा देख आंखे चुराकर वहां से चला गया। भाई को इस तरह से जाता देख हौसला पस्त रश्मि जैसे तैसे अंदर आयी और निढाल सी पलंग पर गिर पड़ी। अपने लोगों का इस तरह रंग बदलना? एक प्रश्नचिन्ह अंकित कर गया उसके मन में।

उस रात उसे मां पिताजी कि कानाफूसी सुनायी दी, पिताजी कह रहे थे, 'यहां हमारे खाने के लाले पड़े हैं और तुम्हे बेटी की शादी की पड़ी है? हमारे नसीब में शायद बेटी के सहारे ही जीना

हो... सो जाओ अब मुझे नींद आ रही है।' पिताजी मुंह फेरकर सो गये। रश्मि ये सब सुनकर हतप्रभ हो गयी, क्या वो यही पापा है? जिन्होंने बचपन में उसे पढाया था, साइकिल पर घुमाया था, जब उसने अपनी पहली तनख्वा उनके हाथ पर रखी तो आंखे भर आयी थी उनकी... कितने आशीष दिये थे उन्होंने। अब उनका ये स्वार्थी रूप देखकर टूट गयी। रात भर बेचैन रही रश्मि।

कुछ दिनों बाद भाई शादी करके अपने घर चला गया। घर तो पहले के मुकाबले कुछ खाली सा हो गया लेकिन अब घर की खुशियां खो गयी थीं। अजीब-सी खामोशी छायी रहती घर में। उस रात के बाद रश्मि ने कभी खुशियों की उम्मीद नहीं रखी। उसकी जिंदगी जैसे एक ही ढर्रे पर चल रही थी जिसमें कोई मोड़ नहीं था।

एक दिन अचानक उसकी गोविंद से मुलाकात हो गयी जो उसकी कंपनी में मैनेजर की हैसियत से तबादला लेकर आया था। धीरे-धीरे दोनों की दोस्ती हुयी और फिर दोस्ती चाहत मे बदल गयी। ये भी इत्तफाक ही था कि अभी गोविंद की शादी नहीं हुयी थी। गोविंद ने उसे शादी के लिये प्रपोज किया।

'अरे बाबा पहले मां की परमीशन ले लो बाद में अपना सोचेंगे'। 'मतलब तुम्हें कोई ऐतराज नही है? तुम राजी हो?' गोविंद ने पूछा। 'हाय गोविंद तुम भी ना, समझा करो यार जब मैं मां से पूछने के लिये कह रही हूं मतलब मेरी हां ही होगी ना' उसने शरमाकर कहा।

और आज गोविंद मां से मिलने भी चला गया। रश्मि अपने ही खयालो में खोयी थी की अचानक बस को जोर से ब्रेक लगा और वह पुरानी यादों से हकीकत में लौट आयी। आज कितने दिनो बाद उसका मूड अच्छा था। मन में फिर से उम्मीद जागी थी। उसे लगा कि वह मां पिताजी को मना लेगी।

वह घर पहुँची तो घर में हमेशा का माहौल था। वह चेंज करके आयी और मां का हाथ बंटाने लगी। उसे मां से गोविंद के

बारे में बात करने में हिचकिचाहट होने लगी। चाय पीकर वह काम मे लग गयी।

अगला दिन भी इसी उहापोह में निकल गया। गोविंद के आने से पहले उसे बात करना जरूरी था। रश्मि जब शाम को घर पहुंची तो मां आलू के पराठे बना रही थी जो पिताजी को बेहद पसंद थे। उसे लगा हर कोई अपने पसंद का खयाल रख रहा है तो मुझे झिझक क्यों? बड़ी हिम्मत करके वह मां के सामने आयी 'मां, मुझे आपसे कुछ कहना है शायद आपको कुछ अटपटा लगे सुनने में, मां मैंने अपना जीवनसाथी चुन लिया है'। मां इस तरह चौंकी कि उनके हाथ का कलछा नीचे गिर गया। 'मां, गोविंद मेरे मैनेजर हैं और मेरे साथ मेरी ही कंपनी में हैं। परिवार के नाम पर उनको सिर्फ मां ही है और मेरे बारे मे बात करने के लिये ही गोविंद अपने गांव गये हैं। वहां से आने के बाद वो हमारे घर आने वाले हैं, आपसे मेरा हाथ मांगने'। मां को लगा कि बात काफी आगे बढ़ गयी है शायद। अब रश्मि किसी की नहीं सुनेगी। 'ठीक है मैं तुम्हारे पापा से बात करूंगी बेटी। मुझे भी लगता है कि हमारे लिये तुमने बहुत कुछ किया है अब तुम्हारा भी घर बसना चाहिये। तुम निश्चिंत रहो, लो चाय पियो'। मां का रवैया देख रश्मि को खुशी हुई।

रात को जब मां पिताजी के कमरे से बातों की आवाज सुनायी दी तो निश्चिंत होकर अपने बिस्तर पर पलकें बंद किये वह गोविंद के खयालो में खो गयी। अगला दिन हमेशा से ज्यादा खूबसूरत था एक तो पापा ने उससे गोविंद के बारे मे बातें कीं एवं उसकी सारी जानकारी ली, मां ने भी प्यार से नाश्ता कराया। वह बादलों पर सवार होके आफिस पहुंची। कल गोविंद भी आने वाला था।

दो दिन की जगह पांच दिन गुजर गये। जब रश्मि गोविंद को फोन करती वह बड़े रूखेपन से पेश आता, ये कहकर कि 'अभी व्यस्त हूं बाद में बात करते हैं। रश्मि का मन अब घबराने लगा। दूसरे दिन जब रश्मि आफिस पहुंची तो उसे गोविंद उसके केबिन मे नजर आया। मारे खुशी से वो उसकी तरफ पहुंची, गोविंद उसके कुछ कहने से पहले ही बोल उठा, 'रश्मि मैं बहुत दिन बाद आया हूं तो अभी व्यस्त हूं। बाद में बात करते हैं, अभी तुम जाओ यहां से...और फोन उठाकर वह किसी से बात करने लगा। किसी अनजानी शंका से रश्मि का मन कांप उठा। फिर भी उसने मन को समझाया कि हो सकता है वाकई में उसे काम हो आखिर मैनेजर है वह कंपनी का। पांच बजे जब वो गोविंद के केबिन तक पहुंची तो उसे पता चला कि वो तो कब का जा चुका है। रश्मि ने जल्दी से फोन मिलाया तो उसका नंबर स्विच ऑफ आने लगा। आखिर क्या बात हो सकती है कि गोविंद उसे टाल रहा है सोचकर वो बेचैन होने लगी। अगले दिन भी गोविंद यूं ही उससे लुकाछुपी खेलता रहा। तंग आकर रश्मि शाम को उसके घर पहुंच गयी। रश्मि को यूँ अपने सामने देखकर वो सकपका गया। 'तुम्हे क्या लगा था गोविंद कि अगर तुम मुझसे नहीं मिलोगे तो मैं तुम तक आ नहीं सकूंगी? इस तरह बदला बदला व्यवहार क्यों है तुम्हारा? मां ने क्या कहा?' रश्मि एक के बाद एक सवाल करती रही। 'रश्मि, हमारी शादी नहीं हो सकती' उसने बात खत्म करते हुए कहा। 'अरे! ये क्या बात हुयी? शादी का फैसला तो हम दोनों का था अब इस तरह तुम कैसे बदल सकते हो? 'देखो रश्मि मां ने अब इन्कार कर दिया है और वजह तुम ना ही जानों तो अच्छा है। बस इतना कह सकता हूं कि आज के बाद हम दोनो ना मिलें तो बेहतर है।' 'नही गोविंद वजह तो तुम्हें बतानी पडेगी। रश्मि के आंखो की बेबसी गोविंद को तड़पा रही थी वो नहीं चाहता था कि रश्मि वजह जाने और रश्मि थी जो कारण जानने के पीछे पड़ी थी।

'रश्मि, मैं जब मां से मिला था तो तुम्हारे बारे मे जानकर वो बहुत खुश थी। वापसी के लिये जिस दिन मैं रात को निकलने वाला था उस दिन दोपहर की डाक से हमें एक लिफाफा मिला जिसमें तुम्हारे बारे मे लिखा था कि 'पत्र लिखने वाला तुम्हें अच्छी तरह जानता है। तुम्हारा चरित्र अच्छा नही है, वरना तीस की उम्र तक तुम कुंवारी क्यों रहती वो भी अच्छा भला कमाने वाली हो तब भी?' बस मां ने पत्र पढ़कर शादी से मना कर दिया। मैंने समझाने की बहुत कोशिश की मगर वो मानने को तैयार नहीं थी और मैं उन्हे इस उमर मे अकेला नहीं छोड़ सकता। मुझे पता है कि मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता पर मुझे मां के लिये ये सहना ही होगा। मुझे माफ कर दो'। सब बताकर गोविंद ने उसके सामने वह लिफाफा रख दिया। रश्मि ने लिफाफा खोलकर देखा तो उसकी आंखें फटी रह गयीं। उसने उस लिखावट को पहचान लिया था। आखिर कैसे भूल सकती थी उस लिखावट को जो उसके लिये कभी आदर्श थी। वो लिखावट उसके पिताजी की थी. अक्षर टेढे-मेढे थे पर उसने पहचान लिये थे। गोविंद के सामने अपने पिता के बारे मे कुछ न कह सकी, उठ गयी वहां से, थके-थके कदम लेकर। गोविंद आना चाहता था उसे छोड़ने के लिये पर रश्मि ने मना कर दिया। अब उसे गोविंद के बिना जीना सीखना था क्योंकि पापा तो कभी भी उसकी शादी करने वाले नहीं थे. टूट कर बिखर गयी रश्मि...क्या अपने कोई इतने मतलबी होते हैं? वो भी पापा? पैरों मे बेड़ियां डाले वो घर की तरफ चल पड़ी, आंखो मे टूटे सपने थे और दिल मे अरमानों की जलती चिताएं।...

-------- ■ ■ --------

ज्योतिष्य कलश

ज्योतिर्विद विजय मोहबे
ई-2/333, अरेरा कालोनी, भोपाल म.प्र.
मो. 9827331388

अक्टूबर माह-2018

प्रमुख तीज त्यौहार- ता. 2 गांधी जयंती, ता. 5 इंदिरा एकादशी, ता. 6 प्रदोष व्रत, ता. 8 पितृमोक्ष अमावस्या, ता. 10 नवरात्र प्रारंभ, ता. 12 विनायकी चतुर्थी, ता. 17 दुर्गा अष्टमी, ता. 19विजयादशमी, ता. 24 शरद पूर्णिमा, ता. 27 करवाचौथ।

मेष- साझेदारी से बचें। गृहप्रवेश हो सकता है। मनोरंजन-भ्रमण के अवसर बनेंगे। व्यापार में परिवर्तन के योग। आय प्राप्ति में थोड़ी कठिनाई रहेगी। युवतियों को नवीन वस्त्राभूषण की प्राप्ति होगी। युवा वर्ग में उत्साह रहेगा। नये कार्यो पर ध्यान दें।

वृषभ- मानसिक संतुलन बनाये रखें। घर परिवार की जिम्मेदारियां बढ़ेंगी। वाहन आदि खरीदने की योजना बनेगी। भाई-बहनों का सुख मिलेगा। नैतिक लाभ हेतु दूसरों को दुख देने से बचें। आध्यात्मिकता में वृद्धि होगी।

मिथुन- महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति। होगी। समय के महत्व को देखकर कार्य करें। स्त्री वर्ग में उत्साह रहेगा। घर में रंगाई-पुताई पर धन खर्च होगा। नई रिश्तेदारी हेतु समय अनुकूल है। मित्र वर्ग आपकी सहायता करेगा।

कर्क- घर-परिवार में आनंद रहेगा। दूर गया मित्र या रिश्तेदार से मिलन होगा। सामाजिक कार्यो में प्रशंसा प्राप्त होगी। आय के साधनों का विकास होगा। व्यर्थ के विवाद या दूसरों की समस्या में समय नष्ट होगा। क्रय-विक्रय करते समय सतर्कता बरतें।

सिंह- कठिन परिश्रम का लाभ मिलेगा। घर में शुभ-मंगल कार्य बनेंगे। यात्रा संभव है। व्यापार-व्यवसाय में विस्तार होगा। अपनी योजनाओं को गुप्त रखें, षडयंत्र का भय रहेगा। कन्या के विवाह की बात बनेगी। प्रयास करें।

कन्या- पत्नी से वैचारिक मतभेद दूर होंगे। आपकी कठिन समस्या हल होगी। प्रतियोगिता परीक्षा के परिणाम सुखद रहेंगे। राजनैतिक कार्यो में सफलता में संदेह रहेगा। स्वभाव में उग्रता से बचें, मधुर व्यवहार से कार्य बनेंगे।

तुला- वृद्धजन के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। रोजगार की दिशा में प्रेरणा मिलेगी। स्वरोजगार के योग बनते हैं। कामकाजी महिलाओं को वेतनवृद्धि के योगं आय-व्यय बराबर रहेंगे। पुत्र के कार्यो पर धन खर्च होगा।

वृश्चिक- धार्मिक कार्यो के प्रति रुचि बढ़ेगी। तीर्थयात्रा आदि की योजना बनेगी। जमीन-जायदाद के विवाद में हानि भय रहेगा। वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। ससुराल पक्ष से सहायता प्राप्त होगी। कोई सुखद समाचार मिलेगा।

धनु- ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार होगा। लेखक, कवि, साहित्यकारों को सम्मान प्राप्त होने के योग हैं। घर में सजावट या श्रृंगार की वस्तुओं पर धन खर्च होगा। घर में अतिथि आगमन के योग। मन प्रसन्न रहेगा।

मकर- प्रेम के क्षेत्र में असफलता का कारण बेवजह सन्देह रहेगा। रिश्तों में गिरावट आयेगी। नौकरी हेतु बाहर क्षेत्र में प्रयास करने से लाभ मिलेगा। कार्यपालन में जल्दबाजी नहीं करें अन्यथा हानि उठानी पड़ेगी। क्रोध से बचें।

कुंभ- परिवार में अस्थिरता का वातावरण रहेगा। कोई भी कार्य बिना सोच-विचार न करें। अपने ही लोग आपसे ईर्ष्या करेंगे। संतान के विवाह की चिंता बढ़ेगी। अनाज या वस्त्र व्यवसायियों को लाभ मिलेगा। आर्थिक व्यवस्थाओं में सुधार होगा।

मीन- रहस्यमय कार्यो में रुचि रहेगी। तंत्र-मंत्र के कार्यो में सावधानी रखें। साझेदारी में किये कार्यो में सफलता के योग बनेंगे। वैभव-विलासिता के साधनों पर धन खर्च होगा। पति-पत्नी में अच्छा तालमेल रहेगा।

नवम्बर माह- 2018

प्रमुख तीज त्यौहार- ता.3 रमा एकादशी, ता. 5 प्रदोष व्रत, ता. 6 नरक चतुर्दशी, ता. 7 दीपावली लक्ष्मीपूजन, ता. 9 भाईदोज, ता. 15 गोपा अष्टमी, ता. 19 देवउठनी ग्यारस, ता. 23 गुरुनानक जयंती, ता. 30 काल भैरव अष्टमी।

मेष- आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। कठिन कार्यो में सफलता प्राप्त होगी। प्रियजन से मुलाकात सुखद रहेगी। स्त्री वर्ग को न्याय मिलने में कठिनाइयां आयेंगी। संघर्ष के पश्चात लाभ के योग।

वृषभ- आपसी तालमेल पति-पत्नी में नवजीवन संचार करेगा। बुजुर्ग व्यक्ति की सलाह से कार्य बनेंगे। आर्थिक पक्ष थोड़ा ढुलमुल रहेगा। खर्च की अधिकता से बचें। दूसरों से मान-सम्मान हेतु व्यर्थ न उलझें।

मिथुन- नये कार्यो में विलम्ब होगा। पूंजीनिवेश या नया कारोबार खोलने का विचार स्थगित रखें। शिक्षा आदि पर खर्च होगा। वाहन कय-विक्रय करने के लिए अनुकूल समय है। कोई संदेश मिलेगा।

कर्क- सामाजिक कार्यो में सम्मान की प्राप्ति होगी। मनोरंजन, भ्रमण के अवसर बनेंगे। खेल-खिलाड़ियों को नये आयाम बनेंगे। स्वार्थी तत्वों से सावधानी रखें। लेनदेन के कार्यो में सतर्कता बरतें।

सिंह- राजनैतिक कार्यो के प्रति उत्साह रहेगा। शेयर, ब्याज आदि से धन की प्राप्ति होगी। कुंवारी कन्या की शादी की बात आगे बढ़ेगी। रिश्तेदारों का सहयोग सराहनीय रहेगा। मन प्रसन्न रहेगा।

कन्या- भविष्य की चिंता रहेगी। रोजगार के क्षेत्र में अड़ंगे आयेंगे। ईश्वर पर भरोसा रखें। समय धीरे-धीरे अनुकूल होगा। व्यापार के क्षेत्र में परिवर्तन के योग। यात्रा हो सकती है।

तुला- कुटुम्बीय कार्यों में समय व धन खर्च होगा। आवेश, क्रोध आदि से स्वास्थ्य में कमी आयेगी। गर्भवती स्त्रियों को पुत्ररत्न की प्राप्ति होगी। आय बढ़ाने के लिए कठिन परिश्रम की आवश्यकता होगी।

वृश्चिक- अपना कार्य दूसरों को न सौंपे अन्यथा हानि होने का भय रहेगा। इलेक्ट्रानिक्स/घरेलू सामान के उत्पादकों या विक्रेताओं को आर्डर मिलेंगे। धन लाभ के योग बनेंगे। स्त्री वर्ग को घरेलू चिंता रहेगी।

धनु- निजी कार्यों पर धन खर्च होगा। प्रतियोगिता परीक्षा के परिणामों में संदेह रहेगा। कानूनी कार्यों में साहस बढ़ेगा। न्यायालयीन मुकदमों में सफलता की प्राप्ति होगी।

मकर- पति-पत्नी में मतभेद बढ़ेंगे। समानता के अधिकारों का हनन होगा। यदि तलाक की बात हो तो संभावना बनेगी। युवा वर्ग को रोजगार के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी।

कुंभ- मकान निर्माण के क्षेत्र में प्रगति रहेगी। बैंक से ऋण आदि की योजना का लाभ मिलेगा। स्त्री वर्ग को शादी-ब्याह के अड़ंगे रहेंगे। शादी की बात टलेगी। समय पर कार्य पूरा न होने से मानसिक परेशानी होगी।

मीन- उच्च स्तर के अधिकारी वर्ग से आपकी मित्रता बढ़ेगी। शासन-सत्ता के कार्य बनेंगे। नौकरी आदि में कार्यक्षेत्र या स्थान परिवर्तन के योग। आय-व्यय बराबर रहेगा।

दिसम्बर माह 2018

प्रमुख तीज त्यौहार- ता. 3 उत्पन्ना एकादशी, ता. 4 प्रदोष व्रत, ता. 18 मोक्षदा एकादशी, ता. 25 क्रिसमस, ता. 20 रुक्मणी अष्टमी।

मेष- सार्वजनिक कार्यों पर धन खर्च होगा। वाणिज्य-व्यापार के कार्यों में विस्तार की योजना बढ़ेगी। लेखन-सम्पादन के क्षेत्र में कीर्ति प्राप्त होगी। दूसरों की बात की अवहेलना करने से कार्य हानि का भय रहेगा।

वृषभ- पारिवारिक वातावरण सुखद रहेगा। तीर्थाटन का योग बनेगा। चारित्रिक सत्यापन हेतु कठिन परीक्षा देना पड़ेगी। लाभ के अवसर चूकेंगे। नेत्र कष्ट से परेशानी संभव है। नवीन वाहन आदि क्रय करने पर धन खर्च होगा।

मिथुन- मित्र वर्ग से दूरियां बढ़ेंगी। घर में शुभ-मंगल कार्य बनेंगे। पार्टी आदि पर धन खर्च होगा। संतान के कार्यों की चिंता रहेगी। संवेदनशील कार्यों में रिश्तेदारों के महत्व को समझकर कार्य करें।

कर्क- घरेलू समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। अस्थिरता का वातवरण रहेगा। पहले पुराने कार्यों को निपटायें फिर कोई नया कार्य लें। व्यक्तिगत अधिकारों हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। भाई-बहनों से अच्छे संबंध रखें।

सिंह- राजनैतिक प्रतिद्वंद्विता के गंभीर परिणाम होंगे। सोच-विचार कर अपनी धारणा पर दृढ़ता से डटे रहें। दाम्पत्य जीवन में सुधार होगा। नवीन वस्त्राभूषण की प्राप्ति होगी। समय धीरे-धीरे अनुकूल बनेगा।

कन्या- धार्मिक कार्यों की ओर रुझान बढ़ेगा। घर में नव आगंतुक से भाग्योदय होगा। व्यापार-व्यवसाय सामान्य लाभ देगा। स्वास्थ्य हेतु स्थान परिवर्तन से लाभ मिलेगा। उच्च रक्तचाप के रोगियों को बाधा रहेगी।

तुला- सामाजिक पद को लेकर उहापोह रहेगी। ईर्ष्या-द्वेष से कार्य बिगड़ेंगे। आत्मविश्वास की कमी रहेगी। युवतियों को व्यवसाय के लिए किए गए प्रयासों में सफलता की प्राप्ति होगी। सम्पर्कों का लाभ मिलेगा।

वृश्चिक- दूसरों की मदद में समय व धन खर्च होगा। दूर-पास की यात्रा संभव है। वाहन आदि चलाते समय सावधानी रखें। नेतृत्व की भावना बढ़ेगी। सामाजिक या राजनैतिक संस्था में पद के लिए पहल कर सकते हैं।

धनु- आदर्श व नैतिक विचारों का सम्मान करें। दूसरों को धोखा देने से बचें। वाणी पर नियंत्रण रखें। विद्यार्थी वर्ग को नवीन उपलब्धियां प्राप्त होंगी। प्रेम-प्रसंगों में उत्साह रहेगा। अपने कार्यों को गोपनीय रखें।

मकर- यदि आप व्यापार करने का सोच रहे हैं तो दूसरों के आधीन कार्य करने में आपको ज्यादा लाभ रहेगा। गृहप्रवेश या नवीन किरायेदारी के लिए समय अनुकूल है। गृहस्थ जीवन सुखमय रहेगा।

कुंभ- ज्ञानवर्धक विचारों से प्रेरित रहेंगे। शिक्षा-अध्यापन या कोचिंग के कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। वाहन आदि के कार्यों पर धन खर्च होगा। ससुराल पक्ष से थोड़ी तनातनी का सामना करना पड़ेगा।

मीन- शादी-ब्याह के कार्यों में शिरकत करेंगे। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। वस्त्र व्यवसाय में लाभ होगा। स्त्री वर्ग घर में बुटिक का कार्य प्रारंभ कर सकती हैं। स्वास्थ्य में थोड़ी थकान महसूस होगी। खानपान पर ध्यान दें।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक अरुण पटेल द्वारा प्रियंका ऑफसेट, 25-ए, प्रेस कॉम्पलेक्स, एमपी नगर, जोन-1, भोपाल से मुद्रित कर ई-100/41, शिवाजी नगर, भोपाल, मप्र-462016, से प्रकाशित। **संपादक- अरुण पटेल**

फोन न.0755-2552432, मो. 9425010804, ईमेल: raghukalash@gmail.com

सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा। RNI No. MPHIN/2002/07269

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

दावे नहीं प्रमाण

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री

प्रदेश में कृषि क्षेत्र में हुई क्रांति
खाद्यान्न उत्पादन में हुई बढ़ोत्तरी

मध्यप्रदेश सरकार ने वर्ष 2003 से लेकर 2018 तक कृषि क्षेत्र में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं जिनके कारण राज्य में खाद्यान्न उत्पादन बढ़ा है और किसान खुशहाल बने हैं।

गेहूं उत्पादन
219 लाख मी. टन
(345 % की वृद्धि)

धान उत्पादन
80.98 लाख मी. टन
(684 % की वृद्धि)

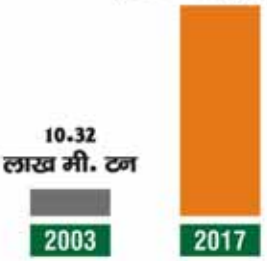

सोयाबीन उत्पादन
84.16 लाख मी. टन
(215 % की वृद्धि)

दलहन उत्पादन
91.69 लाख मी. टन
(163 % की वृद्धि)

तिलहन उत्पादन
69.36 लाख मी. टन
(23 % की वृद्धि)

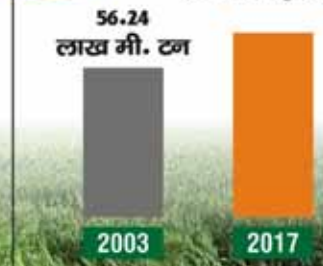

पूरा किया विकास का वादा, आगे है अटल इरादा

D-17005/18

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

/CMMadhyaPradesh /CMMadhyaPradesh

रघुवंशी समाज की पत्रिका रघुकलश के सभी पाठकों और सामाजिक बंधुओं को

हार्दिक शुभकामनाएं

अपील

01. क्लीन सिटी, ग्रीन सिटी बनाने में सहयोग करें।
02. जल ही जीवन है, इसे व्यर्थ न बहाएं।
03. नगर विकास हेतु करों का भुगतान समय पर करें।
04. पॉलीथीन का प्रयोग न करें।
05. नगर को स्वच्छ बनाने में आपकी सहभागिता प्रार्थनीय है।
06. पलकमति नदी का संरक्षण करें और स्वच्छ रखें।
07. शौचालय का प्रयोग करें।

सौजन्य से:- नगर परिषद सोहागपुर, जिला होशंगाबाद